सम्पादकीय परिवार की पाठशाला में बच्चों का जीवन सँवारें 2

ज्ञानयज्ञ विश्व पुस्तक मेले में गायत्री परिवार की भागीदारी 3

मालवा-निमाड़ प्रवास उज्ज्वल भविष्य के लिए चाहिए तुम्हारे समग्र जीवन का रूपान्तरण - *डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी* 6

राष्ट्रीय सक्रिय कार्यकर्ता शिविर समर्पण एवं समन्वय कौशल के साथ मजबूत हो संगठन 7

होली तन ही नहीं, मन को भी प्रेमभाव से रंगने का पर्व है - *डॉ. प्रणव जी* 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अप्रैल 2023

वर्ष : 35, अंक : 19

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 मार्च 2023

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

आडंबर छोड़ो, सादगी अपनाओ

सादगी आत्मिक प्रगति का प्रमुख आधार है

'सादा जीवन, उच्च विचार' की उक्ति सोलह आने सत्य है। सादगी जीवन-साधना का एक अति महत्वपूर्ण अंग है। शेखीखोरी, आडम्बर, अपव्यय, ठाट-बाट की जिन्दगी कितनी बोझिल होती है, यह किसी से छिपा नहीं है। अधिक खर्चीले मनुष्य को ही अमीर माना जाता है और इन दिनों लोग अमीरी के प्रदर्शन में ही शान-शौकत, इज्जत समझते हैं। इसके लिए वे बिना नीति-अनीति का विचार किए जैसे भी बन पड़े, अधिक पैसा बटोरने में संलग्न रहते हैं, ताकि ठाट-बाट बनाने और अमीरों जैसे खर्च कर सकने के साधन प्राप्त कर सकें।

तृष्णा का कोई ठिकाना नहीं, उपभोग की कोई सीमा नहीं, भौतिक महत्वाकांक्षाओं का कहीं अन्त नहीं। जितना अधिक मिलता जाता है, उतनी ही हविश बढ़ती जाती है और बढ़ते-बढ़ते वह जलन का रूप धारण कर लेती है। उसमें झुलसते रहने वाला व्यक्ति हर समय अशान्त, उद्विग्न बना रहता है। इस स्थिति में उच्च आदर्शवादी चिन्तन कर सकना, योजना बनाना तथा कार्यान्वित कर सकना एक प्रकार से असम्भव ही हो जाता है।

भौतिकता बनाम अध्यात्मवाद

अध्यात्म का एक अंग पूजा-पाठ भी है, पर उसे उतनी छोटी परिधि में सीमित नहीं किया जा सकता। वस्तुतः वह एक जीवन-दर्शन है। उसके साथ अमीरी, विलासिता, महत्वाकांक्षा प्राप्त करने जितना ही श्रम, समय एवं मनोयोग लगाना पड़ता है। यह तभी सम्भव है जब भौतिक आकर्षणों से उन्हें बचाया जा सके। अस्तु उच्च विचारों के साथ अध्यात्म मार्ग पर चलने वाला सर्वप्रथम यह निश्चय करे कि उसे सादगी की नीति अपनानी है और गुजारे भर के सादा जीवन में सन्तुष्ट रहना है।

सादगी अपनाने का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति को पुरुषार्थ का परित्याग करके अकर्मण्य बनना होता है अथवा दरिद्रता में सन्तोष करना पड़ता है। सच तो यह है कि अध्यात्मवादी का पुरुषार्थ भौतिकवादियों से भी कहीं अधिक प्रचण्ड होता है। उसे कहीं अधिक सजगता, सक्रियता एवं तत्परता बरतनी पड़ती है। यह सम्भव तभी होता है जब भौतिक महत्वाकांक्षाओं से मुक्ति मिले। अमीरी, ठाट-बाट, तृष्णा और उद्विग्नता के जाल-जंजाल इतने बढ़े-चढ़े होते हैं कि उनकी पूर्ति में अपनी सारी शक्ति झोंक देने पर भी काम नहीं चलता। अनीति पर पूरी तरह उतारू हो जाने पर भी जो मिलता है वह भी उसी मिट्टी में जल जाता है, फिर भी कमी ही अनुभव होती है। इस विपन्न स्थिति में रहते हुए अध्यात्म का जीवन-दर्शन अपनाने एवं तद्नुरूप आचरण करने में सफल नहीं हो सकते।

यह बात हजार बार समझ लिया जाना चाहिए कि आत्मिक प्रगति के लिए समूचे जीवनक्रम को उच्चस्तरीय बनाने की समग्र साधना करनी पड़ती है। मात्र पूजा-पत्री की थोड़ी सी 'हथ फेरी' कर लेने जैसे तुच्छ प्रयत्न से उतना बड़ा लाभ नहीं मिल सकता, जिसके आधार पर तुच्छ से नर कीटक को महात्मा, देवात्मा एवं परमात्मा बनने की परम सिद्धि प्राप्त होती है। सामान्य लोग अपना जीवन-भार भी शाँति से नहीं ढो पाते, जबकि देवात्माएँ अपनी नाव में बिठा कर असंख्यों का बेड़ा पार करती हैं। इतनी बड़ी सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए जो तप करना पड़ता है, उसका प्रवेश द्वार सादगी अपनाने को ही समझा जाना चाहिए।

यदि विलासिता, तृष्णा और अहंता की ही येन-केन प्रकारेण पूर्ति करनी है तो उसमें अध्यात्म का इतना भर विडंबनापूर्ण राई-रत्ती स्थान हो सकता है कि मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए पूजा-पाठ करके देवी-देवताओं से मनौती मनाते रहा जाय। ऐसे ही लोग अभीष्ट मनोरथ पूरे न होने पर पूजा-पाठ और भगवान के प्रति घोर अश्रद्धा व्यक्त करते भी देखे जाते हैं। सन्तों और सिद्ध पुरुषों के इर्द-गिर्द भी वे मनोकामना पूर्ति का वरदान पाने की दृष्टि से ही चक्कर काटते और उन्हें प्रसाद-पुष्प जैसे सस्ते उपहार देकर अपना काम बना लेने की तरकीबें ढूँढ़ते रहते हैं।

अध्यात्मवादी जीवन-दर्शन

इसके विपरीत अध्यात्मवादी जीवन के क्षेत्र में प्रवेश करने वालों के लिए सम्भव नहीं कि वे अमीरी, ठाट-बाट का उपयोग कर सकें। एक तो उन्हें लक्ष्य के प्रति संलग्नता के कारण इतना अवकाश ही नहीं मिलता कि ठाट-बाट के महँगे साधन जुटाये जा सकें। दूसरे वे अपने आस-पास पीड़ा और पतन के करुणा भरे दृश्य देखकर पिघल पड़ते हैं और अपने पास जो कुछ है उसे दयार्द्र होकर दुखियारों के दुःख दूर करने में लगा देने के बिना चैन ही नहीं पड़ता। दूसरों का दुःख बँटा लेने और अपना सुख बाँट देने की कसौटियाँ ही तो अध्यात्म जीवन की वास्तविकता को खरा-खोटा सिद्ध करती हैं। ऐसी दशा में वे जो पाते हैं, उसमें से निर्वाह की न्यूनतम आवश्यकता भर के लिए अपने पास रखकर शेष सब कुछ परमार्थ-प्रयोजन में लगा देते हैं। इसके लिए उन्हें अपने साथ सख्ती बरतनी पड़ती है और अपनी आवश्यकताओं में कटौती करके ही कुछ बचाना पड़ता है, तभी तो वे पुण्य-प्रयोजनों के लिए अपना कुछ श्रद्धा, अनुदान प्रस्तुत कर पाते हैं। स्वयं खचीर्ली जिन्दगी जीने वालों के लिए परमार्थ में कुछ भी कर सकना सम्भव नहीं होता। वे मात्र कल्पना लोक के परमार्थ क्षेत्र में विचरण करने पर सन्तोष कर लेते हैं। कथा, भागवत पढ़ लेने या दूसरी कल्पना-उड़ानों से तीर्थयात्रा, पूजा-पत्री जैसे छुट-पुट क्रियाकृत्य ही उन्हें पर्याप्त लगते हैं और उतने भर से ही ईश्वरीय अनुग्रह बरस पड़ने की आशा लगाये बैठे रहते हैं, जबकि अध्यात्म वस्तुतः जीवन दर्शन और गतिविधियों के निर्धारण का एक विशिष्ट तरीका भर है।

सच्ची सम्पन्नता

यह सोचना व्यर्थ है कि मितव्ययी सादा जीवन अपनाने वाला दरिद्र लगेगा और असम्मान का भाजन बनेगा। होता यह है कि अध्यात्म दृष्टिकोण के कारण सादगी अपनाने वाला व्यक्ति उस परिस्थिति में भी स्वच्छता और व्यवस्था के दो सद्गुण अपने छोटे-बड़े सभी कार्यों में पूरी तरह समाविष्ट किये रहता है। कपड़े सस्ते और कम होते हुए भी बहुत ही स्वच्छ, करीने से सिले और ठीक ढंग से पहने हुए होते हैं। स्वच्छता, सतर्कता और सुरुचि का समन्वय एक अनोखा सौन्दर्य उत्पन्न करता है। यह वेश एवं परिधानों के साथ जुड़कर अपना विशिष्ट आकर्षण उत्पन्न करता है। गाँधी जी मोटे, सस्ते और थोड़े से कपड़े पहनते थे, पर उनकी स्वच्छता और पहनने में बरती गई सतर्कता देखते ही बनती थी।

बात पैसे तक सीमित नहीं है और न खचीर्ले ठाट-बाट तक बात समाप्त होती है। समय, श्रम एवं चिन्तन भी सम्पत्ति है। वस्तुतः असली सम्पत्ति तो यही तीन हैं। उच्च विचार मात्र कल्पना लोक में विचरण करके समाप्त नहीं हो जाते हैं, उन्हें भी कार्यरूप में परिणित होने की बेचैनी रहती है। इसका अवसर उन्हीं को मिलेगा, जो अपनी शक्ति एवं साधनों को सदुद्देश्य में संलग्न कर सकेंगे।

बचत का ही दूसरा नाम सादगी है। धन, समय, श्रम और मनोयोग को अवांछनीय दिशा में खर्च करने को ही विलासिता, अमीरी ठाट-बाट, फिजूल खर्ची आदि के नामों से जाना जाता है। ऐसे लोग जीवनोद्देश्य को पूरा कर सकने वाले कार्यों के लिये खाली हाथ होते हैं। उनके पास जो कुछ था वह तो खचीर्ले ठाट-बाट बनाने में ही कम पड़ता रहता है।

कृपणता नहीं, मितव्ययिता अपनाएँ

यों बचत तो कृपण और संग्रही भी करते रहते हैं, पर उन्हें तो और भी अभागा कहा जायगा। संग्रह किसी विशेष उद्देश्य के लिए किया जा रहा हो तो बात दूसरी है अन्यथा लोभ वश जोड़ते जाना और मोहवश उत्तराधिकारियों के लिए लम्बी-चौड़ी सम्पत्ति छोड़ जाने में लगा रहना और भी बुरा है। अपव्ययी कम से कम क्षणिक शौक-मौज तो कर लेते हैं, कृपण लोग वह भी नहीं कर पाते और उत्तराधिकारियों को व्यसनी, अकर्मण्य बनाने वाला विषवृक्ष रोप कर और भी बड़ा अनर्थ खड़ा कर जाते हैं। यहाँ ऐसी बचत की भी निन्दा की जा रही है। प्रशंसा मात्र उस बचत की है जो सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन के लिए निजी आवश्यकताओं में कटौती करके एकत्रित की गई है। इसी नीति को अपनाने का दूसरा नाम ही सादगी है। इसी में आदर्शवादिता का, आध्यात्मिकता का दर्शन किया जा सकता है।

आत्मोत्कर्ष और लोकमंगल के दोनों ही प्रयोजन अत्यधिक महान हैं। उनमें वासना, तृष्णा की पूर्ति में खर्च होने वाली शक्ति से भी कहीं अधिक साधन लगाने पड़ते हैं। एक ओर से रोकथाम करके ही दूसरी आवश्यकता पूरी होती है। ब्रह्मचर्य रखने से ही बलिष्ठ बना जा सकता है। अपनी सामर्थ्य को वासना, तृष्णा, संग्रह, अहंता की पूर्ति में समाप्त करते चले जाना भी वैसा ही अपव्यय है जिसके रहते आत्मिक प्रगति की सम्भावनाएँ पूरी हो सकना असम्भव है।

आमतौर से मनुष्य की इच्छा विलासी साधनों का उपयोग करके अधिक सुख सुविधा पाने की रहती है। इस मनःस्थिति को बदल कर स्वल्प सन्तोषी एवं आम लोगों की दृष्टि में गरीबों जैसा जीवनक्रम अपनाने का साहस आत्मबल के अभ्युदय का ही चिह्न है। लोक प्रवाह से उलट कर चलने में तीक्ष्णता उत्पन्न होती है। मछली की सामर्थ्य का मूल्यांकन इसी आधार पर होता है कि वह पानी की प्रवाह-धारा चीरकर उलटी दिशा में भी बह सकती है।

आत्मिक जीवन और भौतिक जीवन में यही मौलिक अन्तर है। एक में आदर्शों की पूर्ति के लिए कष्ट सहने का उत्साह रहता है, दूसरे में तृष्णा, वासना की पूर्ति को मानते हुए आदर्शों को ताक में रख देने तक में भी संकोच नहीं होता। सादगी का व्रत धारण करना इस बात का प्रतीक है कि लोक-प्रवाह से असहमति प्रकट करते हुए स्वतन्त्र रीति-नीति अपनाने का साहस उत्पन्न हो गया। सादगी का अवलम्बन छोटी, आरम्भिक किन्तु आत्मिक प्रगति का अतीव उत्साहवर्धक चरण माना जा सकता है और उसका परिणाम निकट भविष्य में ही परम श्रेयस्कर होना समझा जा सकता है।

चलो प्रकृति को निहारें, बच्चों को सँवारें, परिवार की पाठशाला में जीवन को निखारें

युग निर्माण की दिशाधारा

परम्पराओं से बढ़कर प्रगतिशील सोच 'गायत्री परिवार' की पहचान है। इसी सोच के साथ तपस्वी, मनस्वी, स्वावलम्बी, सेवाभावी व्यक्तित्व और समाज का निर्माण हमारा अभियान है। जीवन में संभावनाएँ अथाह हैं, राहें अनेक हैं, अपनी प्रचण्ड सामर्थ्य को पहचानना, पूरे मनोयोग और संकल्प के साथ उसे विकसित करना और स्वयं सूरज-चाँद की तरह चमकते हुए अंधकार में भटकते दुनिया के लोगों को सही राह दिखाना, यही हमारा लक्ष्य है।

पक्षी अपने उड़ान के लिए आसमान में सुरक्षित क्षेत्र के आरक्षण की माँग कहाँ करते हैं? पशु-पक्षी आहार मिलने या न मिलने की शिकायत किससे करते हैं? नदी की जलधारा कब अवरोधों की शिकायत करती है? वह तो अवरोधों को चीरते हुए कहीं लोगों की प्यास बुझाकर, तो कहीं वृक्ष-वनस्पतियों को सींचकर धन्य अनुभव करती है। कुछ जलधाराएँ ऐसी भी होती हैं जिन्हें प्रवाह के साथ बहने का अवसर नहीं मिलता। वे या तो सूरज की गर्मी में तपकर या शनै-शनै धरती में समाकर अपने को निर्मल करते हुए अपने पवित्र उद्देश्य को पाने का प्रयास करती रहती हैं।

मानव जीवन भी बड़ा सरल है। उसे बोझिल और उलझनों से भरा हमारी अनगढ़ महत्त्वाकांक्षाओं ने अथवा नकारात्मकता-निराशावादी मनोभूमि ने बनाया हुआ है। प्रथम पृष्ठ में दिए आलेख के अनुरूप जिनके जीवन की बुनियाद 'सादा जीवन, उच्च विचार' के सिद्धांत पर टिकी होती है, वे हौसलों की ऊँची उड़ान के साथ 'मानवता' के सच्चे स्वरूप को चरितार्थ करते हुए स्वयं ऊपर उठते जाते हैं और दूसरों को भी ऊँचा उठाते रहते हैं।

सादगी और गरीबी में बड़ा अंतर है। आज समाज में एक बहुत बड़ा वर्ग गरीबी के बोझ तले संघर्ष कर रहा है। वह अपनी दयनीय स्थिति से उबरने के लिए प्रशासन या समाज से सहयोग की अपेक्षा करता है। इनमें से अधिकांश लोग ऐसे हैं जो यदि अपनी आर्थिक स्थिति की तुलना मुंशी प्रेमचंद, पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', लाल बहादुर शास्त्री, सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे महापुरुषों से करें तो पाएँगे कि उनकी स्थिति इन महापुरुषों की प्रारंभिक जीवन की आर्थिक स्थिति से कहीं बेहतर है। परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने सिद्धि और सामर्थ्य का अथाह खजाना होते हुए भी अपने आदर्श जीवन से दिखा दिया कि स्वल्प सीमित साधनों में भी कैसा शानदार जीवन जिया जा सकता है।

अंतर व्यक्ति की सोच में है। स्वयं को अभावग्रस्त बताने या मानने वाले लोग भौतिकवादी समाज के अनगढ़ अनुकरण का शिकार होकर हीन भावनाओं से ग्रसित देखे जाते हैं। वे ठाट-बाट और विलासिता के, सुविधा और साधन के सपने देखते रहते हैं। दूसरी ओर महापुरुषों का जीवन होता ही सादगी पसंद है। वे भविष्य की चिंताओं, कुकल्पनाओं और संग्रह की वृत्ति को त्यागकर आत्मभाव में जीवन जीते हैं। वे दैदीप्यमान सूर्य की तरह अपनी प्रतिभा और सामर्थ्य से औरों का जीवन आलोकित करते रहते हैं। महात्मा विनोबा, ईश्वरचंद विद्यासागर, ज्योतिबा फूले, नानाजी देशमुख, बाबू राजेन्द्र प्रसाद जैसे समाज को सही दिशा दिखाने वाले अनेक महापुरुष हुए हैं, जो सभी अकूत प्रतिभा के धनी थे। उन सबने 'सादा जीवन, उच्च विचार' की नीति ही अपनाई, तभी वे महापुरुष बन पाए।

यहाँ बात परम पूज्य गुरुदेव के बताए व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण अभियान की चल रही है। हमें अभिनव समाज के निर्माण के लिए युगऋषि की प्रगतिशील विचारधारा को जनजीवन में प्रतिष्ठित करना है। गायत्री परिवार का प्रत्येक आन्दोलन इसी दृष्टिकोण के साथ संचालित है। वर्तमान समय की माँग है कि हम अपने लक्ष्य पर पुनः चिंतन-मनन करें और समाज में छाए अनगढ़ विचारों के प्रवाह को मोड़ कर उसे अभीष्ट दिशा देने के लिए प्रयत्नशील हों।

हम साँचा बनें, बच्चों को गढ़ें

अप्रैल, मई, जून माह का यह समय बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देने का विशिष्ट समय है। स्कूल की पढ़ाई के बोझ तले दबे बच्चे वार्षिक परीक्षाएँ समाप्त हो जाने के बाद एक नई ताजगी का अनुभव करने लगते हैं। वे पाठ्येतर गतिविधियों की ओर आकर्षित होते हैं। अच्छा हो कि उन्हें ऐसी गतिविधियों में संलग्न किया जाए, जो उनके जीवन को भटकने से बचाए, सही दिशा दे सके व महानता की ओर अग्रसर करे। आज बच्चों के जीवन में आ रहे भटकाव को रोककर उन्हें सद्गुणी, संस्कारवान बनाना है तो इस सुअवसर का लाभ उठाते हुए सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे।

अपने बच्चों को श्रेष्ठ, सद्गुणी, संस्कारवान कौन नहीं बनाना चाहता? समाज आज इस दिशा में बहुत जागरूक और संवेदनशील होता जा रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान को मिल रही वैश्विक प्रतिष्ठा इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। गायत्री परिवार के प्रयासों से यह आन्दोलन देश के कोने-कोने और विदेशों में पहुँच चुका है। इस अभियान को पूरे देश में चिकित्सकों का भरपूर सहयोग मिला। कई राज्यों के स्वास्थ्य विभाग ने सरकारी योजनाओं में गर्भ संस्कार महोत्सवों को स्थान दिया। कई विश्वविद्यालयों में इस विषय को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए पहल हुई। अब राष्ट्रीय टेलीविजन चैनलों पर भी इस विषय पर चर्चाएँ हो रही हैं।

आज के समय में बच्चों के व्यक्तित्व विकास का विषय अत्यंत गंभीर और महत्त्वपूर्ण है। प्रकृति और समाज से निरंतर दूर होती जा रही तथा नशे के चंगुल में फँसकर खोखली होती जा रही युवा पीढ़ी पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा। यह पीढ़ी ही देश का भविष्य है, जिसमें अवज्ञा, तनाव, हिंसा, झूठी शान-शौकत की अभीप्सा बढ़ती ही जा रही है। इस पर अंकुश लगाने की जिम्मेदारी सभ्य समाज के जिम्मेदार नागरिकों की है।

अपनी जिम्मेदारियाँ समझनी होंगी

बच्चों की दूषित मानसिकता और उसके कारण पनपते विकारों के लिए केवल वे बच्चे ही नहीं, बल्कि पूरा समाज जिम्मेदार है। जैसा साँचा होगा, वैसी ही आकृतियाँ ढलेंगी। आज समाज को ऐसे साँचों की आवश्यकता है, जिनमें ढल कर बच्चे भगत सिंह, विवेकानन्द, संत ज्ञानेश्वर की तरह आदर्शनिष्ठ जीवन जी सकें।

बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण की प्रथम जिम्मेदारी उसके माता-पिता और परिवार की होती है। लेकिन यह वर्ग आज अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वाह ठीक से कहाँ कर पा रहा है? न ऐसे संयुक्त परिवार हैं जिनमें दादा-दादी, नाना-नानी शौर्य, साहस, नैतिकता की कहानियाँ सुनाकर बच्चों की मनोभूमि को सद्गुणी-संस्कारवान बना सकें। जब माता-पिता दोनों ही नौकरी, पेशे से हारे-थके घर लौटते हैं तब उनके पास इतना समय कहाँ रह जाता है कि बच्चों की ओर ध्यान दे सकें। जो थोड़ा-बहुत समय बचता है वह सोशल मीडिया और स्वयं के मनोरंजन के लिए भी पर्याप्त नहीं होता। परिवार के साथ बैठने की, आपस में बातचीत करने की परम्परा ही जैसे समाप्त होती जा रही है।

व्यक्तित्व को सँवारने का सबसे बड़ा दायित्व गुरुजनों का होता है। दुर्भाग्य से इन दिनों शिक्षा का व्यवसायीकरण हो जाने के कारण आज गुरु-शिष्य के संबंध भी वैसे नहीं रहे जिसमें शिक्षक में बच्चे के व्यक्तित्व विकास की हूक हो। अब वह संवेदना नहीं बची जिसमें विद्यार्थी अपने गुरु की बात को पत्थर की लकीर मानते थे और उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होते थे। आजकल देखा जाता है कि शिक्षक पाठ्यक्रम पूरा करने को अपनी जिम्मेदारी की इतिश्री मान लेते हैं। शिक्षक व बच्चों का पूरा ध्यान परीक्षा में अच्छे अंक लाने पर सिमट गया है।

बदल गई है दुनिया

विद्यार्थियों में गिरते जीवन मूल्यों का बहुत बड़ा कारण बदलती सामाजिक परिस्थितियाँ भी हैं। आज के इलैक्ट्रॉनिक युग में जीवन प्रकृति से निरंतर दूर होता जा रहा है। एक शोध के अनुसार भारत के युवा प्रतिदिन औसतन आठ घण्टे ऑनलाइन रहते हैं। जिन देशों में युवा सबसे ज्यादा वीडियो गेम्स खेलते हैं, उनमें भारत तीसरे नम्बर पर है। मोबाइल एप डाउनलोड करने के मामले में भारत सर्वप्रथम है।

इण्टरनेट का हमारी प्रगति में अद्वितीय योगदान है। इसकी देश और दुनिया के विकास में सर्वोपरि भूमिका है। चिन्ता इसके दुरुपयोग की है। इण्टरनेट पर परोसे जाने वाली उस सामग्री की है, जिससे मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है। जिसके कारण मानवीय दुनिया घर की चहारदीवारी में सिमटकर रह गई है। जीवन का जो बेशकीमती समय आत्मिक प्रगति में खर्च किया जाना चाहिए था, वह इण्टरनेट के आकर्षणों में बर्बाद हो रहा है। कोरोना काल ने दुनिया में मनुष्य का स्वास्थ्य ही खराब नहीं किया, बल्कि ऑनलाइन गतिविधियों को बढ़ावा देकर क्या बच्चे, क्या जवान, क्या नर, क्या नारी हर किसी की मानसिकता को दूषित करने का सरंजाम भी जुटा दिया है।

कभी कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट, वॉलीबॉल खेलकर व्यक्ति की शारीरिक दक्षता और सहनशक्ति बढ़ा करती थी, अब वीडियो गेम आलस्य, रोग, मोटापा बढ़ा रहे हैं। बच्चों के पास इतना तक समय नहीं रह गया कि बिना मोबाइल के अपने परिवारी जनों के साथ मिल-बैठकर भोजन कर लें। देश की मिट्टी से जुदा होकर मांसपेशियाँ सुदृढ़ करने के लिए अब मशीनों का और शारीरिक ताकत बढ़ाने के लिए प्रोटीन सप्लिमेण्ट्स का सहारा लिया जा रहा है। घी-दूध नहीं, जंक फूड और चटपटे तामसी व्यंजन बच्चों की पहली पसंद है। मोबाइल और इंटरनेट के इस युग में कल-कल बहती नदियाँ, पक्षियों का कलरव, गोधूलि वेला में रंभाती गायें, भोर की गुनगुनी धूप, खेत-खलिहानों में लहलहाती फसलें उन्हें कहाँ आकर्षित कर पाते होंगे?

प्रबुद्ध जनमानस आगे आए

इस आलेख का तात्पर्य यही है कि बच्चों का व्यक्तित्व विकास आज की अपरिहार्य आवश्यकता है। गायत्री परिवार तो इसके लिए अथक प्रयास कर ही रहा है, आवश्यकता है कि अभिभावक, शिक्षक और समाज का हर वर्ग इस आवश्यकता को अनुभव करे और अपनी जीवन शैली को बदले।

बच्चों के व्यक्तित्व पर घर की पाठशाला का ही सर्वाधिक प्रभाव होता है। यदि माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे सद्गुणी, संवेदनशील, सेवाभावी बनें तो इस कार्य के लिए उन्हें भी अपनी जीवन शैली बदलनी होगी। बच्चों को पर्याप्त समय और प्यार देकर, उनके साथ मित्रवत व्यवहार कर उनके चिंतन और चरित्र को अभीष्ट दिशा दी जा सकती है।

शिक्षकों पर बच्चों को पढ़ाने मात्र का नहीं, राष्ट्र के निर्माण का दायित्व होता है। निःसंदेह उनके भी सभी अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए, लेकिन उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि वे देश के भावी प्रशासक-पुरोधाओं को गढ़ रहे हैं। ऐसे में उनकी नैतिक जिम्मेदारियाँ कम नहीं हैं, जिन्हें ईमानदारी से पूरा करें तो निश्चित ही उनके विद्यार्थी भी आज्ञाकारी बनेंगे।

इस कार्य में लोक शिक्षकों की बड़ी भूमिका है। समाज के हर व्यक्ति को इस दिशा में जागरूक होने और बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए यथासंभव योगदान देने की आवश्यकता है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से, संस्कृति मण्डल, बाल संस्कारशाला, बाल वाटिका, कन्या-किशोर कौशल शिविर, विद्यालयों में संगोष्ठियाँ, नशामुक्ति आन्दोलन जैसी अनेक योजनाओं के माध्यम से बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए पूरे देश और दुनिया में सक्रिय है। इस दिशा में शान्तिकुञ्ज से युवा प्रकोष्ठ और भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ द्वारा सतत मार्गदर्शन दिया जा रहा है। इन सभी के कार्यक्रम, प्रभाव, विस्तार की योजनाओं की चर्चा अगले अंक में करेंगे। जिन्हें त्वरित मार्गदर्शन की आवश्यकता हो, वे शान्तिकुञ्ज के युवा प्रकोष्ठ से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

इस संदर्भ में यहाँ सार-संक्षेप में इतना ही बताना है कि हमारे गुरुकुलों की सनातन परम्परा में प्रकृति के साथ साहचर्य और जीवन का जो व्यावहारिक ज्ञान मिला करता था, कुछ ऐसी ही गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को इण्टरनेट की आभासी दुनिया से निकालकर वास्तविक दुनिया का बोध कराया जाना चाहिए। ऐसी गतिविधियाँ, जिनके माध्यम से वे परिश्रम, स्वस्थ मनोरंजन, मनोविनोद, कला, साहित्य, अध्यात्म, समाज और संस्कृति से जुड़कर आत्मविकास की दिशा में आगे बढ़ते रहें। (क्रमशः अगले अंक में)

नवयुग सृजन के लिए उभर रहे हैं युवा संकल्प

महाराष्ट्र का प्रान्तीय युवा चिन्तन शिविर

पुणे। महाराष्ट्र

अश्वमेध महायज्ञ, मुम्बई का प्रयाज

जनवरी-2024 में मुम्बई में अश्वमेध महायज्ञ के आयोजन को लेकर महाराष्ट्र के युवा बहुत उत्साहित हैं। इसी संदर्भ में नवचेतना जागरण एवं विस्तार हेतु पुणे में 25 एवं 26 फरवरी की तिथियों में प्रान्तीय युवा चिन्तन शिविर का आयोजन किया गया। इसमें सम्पूर्ण महाराष्ट्र से आए लगभग 180 प्रमुख युवा कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। उनका मार्गदर्शन करने के लिए शान्तिकुञ्ज से युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री केदार प्रसाद दुबे और श्री आशीष सिंह उनके बीच उपस्थित रहे।

दो दिवसीय कार्यक्रम में केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने भविष्य के भारत के निर्माण में युवाओं की सोच और सक्रियता पर विशेष रूप से चर्चा की। श्री के.पी. दुबे जी ने कहा कि अश्वमेध महायज्ञ विचारों के परिष्कार का महान अनुष्ठान है। हम जिस सतयुगी समाज का निर्माण करना चाहते हैं, उसके अनुरूप हमें अपने व्यक्तित्व और चरित्र से समाज का मार्गदर्शन करना होगा।

दो दिवसीय शिविर में जिलेवार प्रगति और सक्रियता की समीक्षा हुई। सामूहिक उपासना, ध्यान आदि गतिविधियों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भी संदेश दिया गया। आगामी दिनों चलाए जाने वाले रचनात्मक कार्यक्रमों सम्बन्धी मार्गदर्शन दिया गया। यह शिविर प्रवासी युवाओं को तैयार करने तथा जन्मशताब्दी वर्ष की योजनाओं पर विचार मंथन के लिए भी समर्पित रहा।

आँवलखेड़ा उपजोन के कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण

आँवलखेड़ा, आगरा। उत्तर प्रदेश

उपजोन आँवलखेड़ा के अंतर्गत जिले आगरा, मथुरा, हाथरस, एटा और फिरोजाबाद के कार्यकर्त्ताओं का पाँच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 21 से 25 फरवरी 2023 की तिथियों में गायत्री शक्तिपीठ आँवलखेड़ा में सम्पन्न हुआ। कुल 60 कार्यकर्त्ताओं ने प्रशिक्षण लिया, जिनमें से 30 कार्यकर्त्ताओं ने 15 दिन से लेकर तीन माह तक के समयदान का संकल्प लिया। प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं ने अपने जिले के हर गाँव में घर-घर देवस्थापना एवं यज्ञ अभियान चलाने का संकल्प लिया। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री घनश्याम देवांगन के मार्गदर्शन में सर्वश्री सुरेन्द्रनाथ वर्मा, जोन समन्वयक श्री जे.एस. कुशवाह, प्रेम जी, श्री दीनदयाल जी एवं श्रीमती दुर्गा देवांगन ने मिशनरी योग्यताओं का प्रशिक्षण देने के साथ सभी में श्रद्धा-समर्पण भाव का भरपूर संचार किया।

घर-घर युगचेतना विस्तार के लिए अपने-अपने जिलों में समयदान का संकल्प लिया

छात्रावास में कन्या कौशल संगोष्ठी

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

8 मार्च को नगर के कुण्ड पहाड़ी स्थित छात्रावास परिसर में गायत्री परिवार द्वारा कन्या कौशल संगोष्ठी का आयोजन किया गया। युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री मदन समेले सहित समस्त वक्ताओं ने कहा कि भारतीय नारी की सनातन उत्कृष्टता का आधार उसके संस्कार हैं। श्री मदन समेले ने कहा कि नारी समाज का मेरुदण्ड है। नारी उत्कर्ष के बिना सामाजिक उत्थान की कल्पना नहीं की जा सकती।

संगोष्ठी में भाग ले रही छात्रावास की बालिकाएँ

महाविद्यालय की प्राध्यापिका सुश्री मृदुला स्वर्णकार ने कहा कि बाहरी सुंदरता से आंतरिक सुंदरता अधिक महत्त्वपूर्ण है। सुश्री नीलम गुप्ता ने नकारात्मकता और रूढ़िवादी सोच से उबरकर आत्मविश्वासपूर्वक आगे आने के लिए प्रेरित किया। श्री मनोज त्रिपाठी और श्री धर्मेन्द्र चौरसिया ने परीक्षाओं के समय शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव से दूर रहने के उपाय बताये। अधीक्षक माधुरी वर्मा द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ संगोष्ठी का समापन हुआ।

उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाया जाए गर्भ संस्कार पाठ्यक्रम

- राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

झाँसी। उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल माननीय आनन्दीबेन पटेल ने बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय के 27वें दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित करते हुए प्रदेश के उच्च शिक्षण संस्थानों में गर्भ संस्कार पर पाठ्यक्रम लागू करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि गर्भ के समय ही माताओं को सही संस्कार देने की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से गर्भवती महिलाओं के खानपान और अन्य जानकारियाँ विद्यार्थियों को देने के लिए पाठ्यक्रम विकसित किया जाना चाहिए।

माननीय राज्यपाल ने दीक्षांत समारोह में आँगनबाड़ी और झोंपड़पट्टी में रहने वाले लोगों के विकास पर भी बल दिया।

प्रतिष्ठित चिकित्सक की संस्कार परम्परा पर आस्था

निःसंतान दम्पतियों हेतु कार्यशाला

उज्जैन। मध्य प्रदेश

दिनांक 25 फरवरी 2023 को महाकालेश्वर आई.वी.एफ. सेंटर, जे.के. हॉस्पिटल में निःसंतान दंपत्तियों के लिए विशाल निःशुल्क शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में जे.के. हॉस्पिटल की संचालिका डॉ. जया मिश्रा ने निःसंतान दम्पतियों के मार्गदर्शन के लिए गायत्री परिवार की उज्जैन शाखा को भी आमंत्रित किया था।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की उज्जैन उप जोन समन्वयक श्रीमती उर्मिला प्रहलाद सिंह तोमर ने कार्यशाला में गायत्री परिवार का प्रतिनिधित्व करते हुए प्राचीन काल के गर्भाधान संस्कार और वर्तमान में पुंसवन संस्कार के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार का आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान इन्हीं संस्कारों का समयानुरूप संस्करण है। इसके अन्तर्गत गर्भ धारण से पूर्व दम्पति शिविर किया जाता है, जिसमें संतान प्राप्ति के इच्छुक दम्पतियों को उचित आचार-विचार-व्यवहार की जानकारी दी जाती है।

डॉ. जया मिश्रा व उर्मिला तोमर

डॉ. जया मिश्रा युगऋषि की संस्कार परम्परा को प्रोत्साहित करने में गायत्री परिवार की बड़ी समर्थ और सहयोगी रही हैं। उन्होंने आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान को गति देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गायत्री परिवार उज्जैन उन्हें अपना सहयोगी पाकर विशिष्ट गौरव अनुभव करता है।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के लिए मिला सम्मान

समारोह में सम्मान ग्रहण करती गायत्री परिवार की बहिन

सतना। मध्य प्रदेश : अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में ऑल इंडिया लॉयनेस क्लब की एक शाखा द्वारा गायत्री परिवार की बहिनों को सम्मानित किया गया। 4 मार्च 2023 को एक सार्वजनिक समारोह में यह सम्मान दिया गया। यह सम्मान 'आओ गढें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अन्तर्गत गायत्री परिवार की बहिनों द्वारा 5 डॉक्टरों के नर्सिंग होम में 400 से अधिक गर्भ संस्कार कराए जाने के उपलक्ष में दिया गया है।

5 नर्सिंग होम में 400 बहिनों के गर्भ संस्कार कराए।

6 मार्च 2023 को क्लब की एक अन्य शाखा ने डॉ. मनीषा सोईन के नेतृत्व में गायत्री परिवार को विशिष्ट सम्मान दिया। सम्मानित बहिनों ने बड़ी विनम्रता के साथ यह दोनों सम्मान अपनी मार्गदर्शक गुरुसत्ता एवं श्रद्धेया शैल जीजी व श्रद्धेय डॉक्टर साहब को समर्पित किए हैं।

ऑपरेशन दोस्त में शामिल जवानों का अभिनंदन

श्री विंध्याचल सिंह एनडीआरएफ कमांडेंट श्री मनोज कुमार शर्मा को सम्मानित करते हुए तथा ऑपरेशन दोस्त पूरा कर लौटे जवानों के साथ गायत्री परिवार के परिजन

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

तुर्किए में आए भीषण भूकम्प के समय राहत कार्यों में सहयोग करके भारत लौटे एनडीआरएफ के जवानों का गायत्री शक्तिपीठ लंका, वाराणसी की ओर से भावभरा स्वागत किया गया। 28 फरवरी को एनडीआरएफ के चौकाघाट स्थित मुख्यालय में कमांडेंट श्री मनोज कुमार शर्मा व अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में गायत्री परिवार ने 'ऑपरेशन दोस्त' में शामिल सभी 52 जवानों का अभिनन्दन किया। इसके लिए शक्तिपीठ के वरिष्ठतम प्रतिनिधि श्री विंध्याचल सिंह के नेतृत्व में गायत्री परिवार की टोली एनडीआरएफ के मुख्यालय पहुँची। श्री विंध्याचल सिंह ने जवानों के सम्मान में अपने भावोद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि जब पुरुषार्थ, पराक्रम माँ भारती के सम्मानार्थ परोपकार भाव से प्रयोग किया जाता है तो वह पूजा जाता है। उन्होंने कहा कि आप मानव को बचाने में लगे हैं, वहीं गायत्री परिवार सेवा के उसी भाव के साथ मानवता को बचाने में प्राणपण से लगा है। इसका सुख, आनंद बचाने वाला ही अनुभूत कर सकता है।

विश्व पुस्तक मेला — अत्यंत सफल और लोकप्रिय रहा नौ दिवसीय ज्ञानयज्ञ

नई दिल्ली

प्रगति मैदान, नई दिल्ली में दिनांक 25 फरवरी से 5 मार्च 2023 की तिथियों में आयोजित विश्व पुस्तक मेला युगऋषि के विचार क्रान्ति के बीजों को बुद्धिजीवियों के मन-मस्तिष्क में प्रतिष्ठित करने की दृष्टि से बहुत सफल रहा। इस नौ दिवसीय ज्ञानयज्ञ अनुष्ठान के माध्यम से पाँच लाख रुपयों से अधिक का साहित्य बुद्धिजीवियों तक पहुँचा। साहित्य प्रेमियों के साथ विभिन्न विश्वविद्यालयों के शोधार्थी विद्यार्थी, उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रोफेसर, शिक्षक और मीडिया कर्मियों ने युगऋषि के विचारों की विशेष रूप से सराहना की और प्रचुर मात्रा में साहित्य खरीदा। अनेक विशिष्ट महानुभावों ने युग साहित्य स्टॉल पर आकर उत्साहवर्धन किया।

सहयोग : विश्व पुस्तक मेले में मिली शानदार सफलता में एनसीआर के सभी शक्तिपीठ (शाहदरा, हिंडन तट, झटिकरा, गुरुग्राम, ग्रेटर नोएडा, फरीदाबाद), सभी जिलों के प्रज्ञा-मंडल, महिला मंडल और युवा मंडल तथा ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित इकाइयों का शानदार सहयोग, समयदान और समन्वय रहा। गायत्री चेतना केन्द्र नोएडा के व्यवस्थापक श्री बालरूप शर्मा ने समापन दिवस पर सभी की सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

गायत्री परिवार के स्टॉल पर पहुँची एबीपी न्यूज की टीम का स्वागत करते परिजन

इस अवसर पर उन्होंने परिजनों को अपने जन्मदिवस पर किसी शिक्षण संस्थान या सार्वजनिक पुस्तकालय में वेद, वाङ्मय या युग साहित्य की स्थापना कराने के लिए प्रेरित किया।

छाये रहे युग निर्माणी

- अपने पीत वस्त्रों में सैकड़ों की संख्या में युग निर्माणी परिजन गले में ज्ञानपट डालकर पूरे परिसर में लोगों का ध्यान आकर्षित करते रहे।

आर्ष साहित्य की माँग रही

- लोगों ने आर्ष साहित्य (वेद, उपनिषद और दर्शन) खरीदने में विशेष उत्साह दिखाया।
- शान्तिकुञ्ज से श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित परिजनों को शुभकामनाएँ भेजी थीं।

मीडियाकर्मियों का स्वागत

मेले के पाँचवें दिन लोकप्रिय टीवी चैनल एबीपी न्यूज की ओर से सीनियर वाईस प्रेसीडेंट श्री संत प्रसाद राय, इनपुट एडिटर श्री इंद्रजीत राय एवं लोकप्रिय एंकर सुश्री रुबिका लियाकत का आगमन हुआ। अनेक मीडिया कर्मी भी पधारे, जिनका गायत्री मंत्र का उपवस्त्र ओढ़ाकर स्वागत किया गया। एक ही व्यक्ति द्वारा लिखे गए विपुल साहित्य को देखकर वे हतप्रभ थे। उन्होंने शान्तिकुञ्ज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय आने का आश्वासन दिया।

रक्तदान शिविर में हुई आनन्द की अनुभूति

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर 5 मार्च को रक्तकोष जिला चिकित्सालय उज्जैन के सहयोग से स्वास्थ्य परीक्षण एवं रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। 50 से अधिक लोगों ने अपना स्वास्थ्य परीक्षण करा कर उचित परामर्श प्राप्त किया। 30 लोगों ने रक्तदान किया। प्रथम बार के रक्तदाताओं को इस पारमार्थिक कार्य में विलक्षण आनन्द की अनुभूति हुई। इस अवसर पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि श्री कृष्णा पटेल भी उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि आत्मिक आनन्द जीवन के लिए वरदान है। रक्तदान जैसे सेवाकार्यों से इस आनन्द की सहज अनुभूति होती है।

स्वास्थ्य परीक्षण में आए लोगों को विशेषज्ञों से परामर्श करने में सहायता की गई। दूर-दराज से आए मरीजों को उनके शहर में निःशुल्क परामर्श के लिए उपलब्ध विशेषज्ञों की जानकारी दी गई। डॉ. विनोद गुप्ता, डॉक्टर श्रीमती शशि गुप्ता, डॉ. संगीता गुप्ता, डॉ. वी. के. तिवारी, डॉ. धीरज देवड़ा, डॉ. शिवानी प्रजापति, डॉ. इशिता शास्त्री, डॉ. दीपक सिंह (फिजियोथेरेपिस्ट) के साथ ब्लड बैंक के कर्मियों ने भावभरी सेवाएँ प्रदान कीं।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

केरल में पहली बार हुआ आयोजन

23 केन्द्रीय विद्यालयों के 1617 विद्यार्थियों ने भाग लिया

त्रिशूर के एक केन्द्रीय विद्यालय में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह

कोच्चि के केन्द्रीय विद्यालय में प्रमाण पत्र पाकर गदगद हो गए विद्यार्थी

केरल राज्य में गत वर्ष पहली बार भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आयोजित हुई। दिनांक 20 दिसम्बर 2022 को आयोजित इस परीक्षा में राज्य के 11 जनपदों में कोचीन, एर्नाकुलम, त्रिशूल, पालघाट, तिरुवनन्तपुरम, कोल्लम, कन्नूर, पलक्कड़, कसरगोड़, कालीकट, पथनमथिता, इडुकी, कोट्टायम आदि नगरों के 23 केन्द्रीय विद्यालयों के पांचवीं से इंटरमीडिएट तक के 1617 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

दिनांक 15 से 24 फरवरी 2023 की तिथियों में परीक्षा में भाग लेने वाले प्रत्येक केन्द्रीय विद्यालय में पुरस्कार वितरण समारोहों का आयोजन हुआ।

अधिकांश पुरस्कार वितरण समारोहों में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा तथा गायत्री परिवार के स्थानीय गणमान्य उपस्थित रहे। इन कार्यक्रमों में प्रत्येक प्रतिभागी विद्यार्थी को प्रमाण पत्र, प्रत्येक कक्षा स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को निर्धारित नकद राशि, प्रमाण पत्र व पदक देकर सम्मानित किया गया। परीक्षा में सहयोग करने वाले प्रत्येक प्रधानाचार्य-शिक्षक को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे सांस्कृतिक चेतना विस्तार के अभियान में अधिक से अधिक सहयोग करने की प्रेरणा दी गई। गायत्री परिवार के प्रतिनिधियों ने बताया कि बच्चों का नैतिक उत्थान राष्ट्र के नवनिर्माण का एक अत्यंत प्रभावशाली अभियान है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन केरल के डिप्टी कमिश्नर श्री आर सैथिल कुमार, असिस्टेंट कमिश्नर श्रीमती दीप्ती नायर, असिस्टेंट कमिश्नर श्री संतोष कुमार के विशेष सहयोग से राज्य में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन संभव हो सका। गायत्री परिवार की ओर से कोचीन के श्री अशोक अग्रवाल, श्री लजपत राय कचौलिया, त्रिवेंद्रम के श्री प्रभुदान रतनू, श्री विजय अरोरा, श्री रंजीत कार्तिकेयन, कालीकट के श्री एमटी विश्वनाथन एवं श्री ज्योतिष प्रभाकरन ने इसके लिए अथक परिश्रम किया।

जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह

मिल रहा है जिला शिक्षा अधिकारी का शानदार सहयोग

चूरू। राजस्थान

दिनांक 19 फरवरी 2022 के दिन गायत्री शक्तिपीठ चूरू में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का जिला स्तरीय सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। इसके मुख्य अतिथि श्री निसार अहमद खान, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) थे। इस समारोह में 144 बच्चों को तहसील स्तरीय एवं 24 बच्चों को जिला स्तरीय पुरस्कार स्वरूप नगद राशि, प्रतीक चिह्न, वरीयता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। गायत्री परिवार द्वारा पधारे हुए सभी अध्यापकों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री बालदान चारण ने किया।

चूरू जिले के भासंज्ञाप संयोजक श्री उम्मेद सिंह राठौड़ ने बताया कि श्री निसार खान ने फरवरी 2023 में शान्तिकुञ्ज में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी भाग लिया। अपनी अभिव्यक्ति में उन्होंने अपनी ओर से हर सम्भव सहयोग करने का आश्वासन भी दिया।

श्री निसार खान, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए

मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन श्री दुर्गा शंकर मिश्र के संदर्भ पुस्तकालय में वाङ्मय सहित्य की स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ ने अपने विचार क्रान्ति ज्ञानयज्ञ अभियान के अन्तर्गत दिनांक 2 मार्च 2023 को श्री दुर्गा शंकर मिश्रा, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ के संदर्भ पुस्तकालय में परम पूज्य गुरुदेव के सम्पूर्ण वाङ्मय की स्थापना कराई। इस अवसर पर विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भावी सतयुगी समाज का दर्पण है। इन विचारों के आधार पर सतयुगी समाज की संरचना हो सकेगी।

यह साहित्य गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्ता आर्किटेक्ट सुश्री स्वप्निल सिंह गंगवार ने अपने पूज्य नाना-नानी स्व. रामदास गंगवार एवं स्व. शांति देवी गंगवार की स्मृति में भेंट किया है। मुख्य सचिव कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारियों को अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ भेंट की गईं। वाङ्मय स्थापना समारोह में डॉ. नरेन्द्र देव, श्रीमती ऊषा सिंह, श्री देवेन्द्र सिंह गंगवार, आर्किटेक्ट सुश्री स्वप्निल सिंह गंगवार, श्री जितेन्द्र सिंह, श्री वी.के. श्रीवास्तव पूर्व ई.एन.सी. पी.डब्लू.डी. यू.पी. इत्यादि उपस्थित थे।

सुश्री स्वप्निल सिंह गंगवार मुख्य सचिव मान.श्री दुर्गाशंकर मिश्रा को वाङ्मय भेंट करते हुए

असम तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञापुराण कथा श्रृंखला

2000 दीक्षा और 50 विवाह संस्कार हुए; कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर के साथ हुआ समापन

गुवाहाटी। असम : 28 जनवरी से 6 मार्च तक गुवाहाटी जोन, असम तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में 9 और 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं पावन श्रीमद् प्रज्ञापुराण कथा श्रृंखला का सफलतापूर्वक आयोजन संपन्न हुआ। इस श्रृंखला में असम राज्य में क्रमशः श्यामाबाड़ी, जिला उदालगुड़ी में 24 कुण्डीय, जिला बाक्सा के मेनका चाय बगान कुमारीकाटा में नौ कुण्डीय, उदालगुड़ी जिले के धरमजुली में 24 कुण्डीय, इसी जिले के बदलापारा में 9 कुण्डीय, ढेकियाजुली, जिला शोणितपुर में 24 कुण्डीय, दुलियाजान, जिला डिब्रूगढ़, में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ प्रज्ञापुराण कथा का आयोजन किया गया।

गायत्री चेतना केन्द्र, गुवाहाटी में आयोजित शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्त्ता भाई-बहिन प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए

पूरी श्रृंखला अपेक्षा के अनुरूप अत्यंत सफल और उत्साहवर्धक रही। कार्यक्रम 3 तथा 4 दिवसीय थे, जिनमें लगभग 2000 लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा, 200 से ज्यादा विद्यारंभ संस्कार, अनेक पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन संस्कार हुए। 50 से अधिक जोड़ों ने युगऋषि की प्रेरणादायी आदर्श संस्कार पद्धति से विवाह संस्कार कराया।

सर्वश्री क्षिरोदेश प्रसाद, कविन्द्र डेका, जितेन्द्र कुमार आनंद, शैलेंद्र तुरी तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र योगेश कुमार ने समस्त कार्यक्रम सम्पन्न कराए। मुख्य कार्यक्रमों के बीच समय निकाल कर कई गाँवों में भी पाँच कुण्डीय यज्ञ कराए गए।

गुवाहाटी गायत्री चेतना केंद्र में 1 से 6 मार्च की तिथियों में कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर के आयोजन के साथ श्रृंखला का समापन हुआ। पूर्वोत्तर क्षेत्र के अनेक नए उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लेकर ढपली, संगीत, कर्मकाण्ड एवं युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े विषयों पर संभाषण का प्रशिक्षण लिया।

उपेक्षितों के उत्थान की प्रार्थना के साथ दी यज्ञ आहुतियाँ

अलवर। राजस्थान : दिनांक 23 फरवरी 2023 को अपनाघर आश्रम, महिला शाखा, अलवर का चतुर्थ स्थापना दिवस गायत्री यज्ञ के साथ मनाया गया। श्री सतीश सारस्वत (अपनाघर आश्रम कार्यकारिणी के सदस्य भी हैं) तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार की छात्रा सुश्री जाह्नवी साहू और सुश्री पूनम राठौड़ ने यज्ञ संचालन किया। यज्ञ में सभी ने प्रभु आवासियों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ तथा उनके परिवार से मिलन की कामना से आहुतियाँ समर्पित कीं।

अपनाघर आश्रम अलवर, माँ माधुरी ब्रज वारिस सेवा सदन, अपनाघर आश्रम, बझेरा, भरतपुर के द्वारा संचालित है, जोकि असहाय, लावारिस, पीड़ित, परित्यक्त मानव को आवास, भोजन, उपचार, वस्त्र आदि सुविधाएँ उपलब्ध करा रहा है। यज्ञ में अपनाघर आश्रम अलवर के संरक्षक श्री संतोष कुमार अरोड़ा, अध्यक्ष श्री अशोक कुमार गुप्ता सहित अनेक गणमान्यों ने भाग लिया।

विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाते यज्ञ समारोह

4500 विद्यार्थियों ने यज्ञ किया

गुरुग्राम। हरियाणा

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए समर्पित युवा युग निर्माणी दम्पति श्रीमती मनीषा एवं श्री संजय सिन्हा तथा माता भगवती प्रज्ञा मंडल गुरुग्राम ने सत्र समापन की वेला में नैतिक उत्थान और वैचारिक परिष्कार के लिए प्रशंसनीय प्रयास किए। बोर्ड की परीक्षाओं से पूर्व विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाने की नितांत आवश्यकता होती है। इसी को ध्यान में रखते हुए फरवरी के चार सप्ताह में 7 पंच कुण्डीय यज्ञ एवं 2 एक कुण्डीय यज्ञ के साथ सत्रान्त शुभकामना एवं विदाई समारोह आयोजित किए गए। इनमें कक्षा 10 और 12 के बच्चों को व्यक्तित्व को निखारने के लिए सत्प्रेरणाएँ भी दी गईं। श्री संजय सिन्हा के अनुसार लगभग 4500 विद्यार्थियों ने इन यज्ञ-विदाई समारोह में भाग लिया।

इस प्रकार के कार्यक्रमों को विद्यालय परिवार द्वारा बहुत पसंद किया जा रहा है। सभी प्रधानाचार्यों ने गायत्री परिवार के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम बच्चों में नए विश्वास का संचार करते हैं। इस अभियान में संजय जी व मनीषा के साथ ज्योति सहाय, ज्योति शर्मा, ममता, स्वाति, मनोज, तेजस्वी, पंकज, रामगिन की सक्रिय सहभागिता रही।

गुरुकृपा व गायत्री मंत्र लेखन से मिली अद्भुत सफलता

भरतपुर। राजस्थान

जब श्री सुशील पाराशर 10-12 वर्ष के थे, तब उनकी पढ़ने में रुचि नहीं थी। तब उनके पिता श्री रमेश चंद्र पाराशर, जो कि गायत्री तपोभूमि मथुरा के ट्रस्टी हैं, उन्हें सन् 1972-73 में परम पूज्य गुरुदेव के पास लेकर आए। परम पूज्य गुरुदेव ने बालक के सिर पर हाथ रख कर श्री रमेश जी को कहा था कि वे सुशील से प्रतिदिन गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका का एक पृष्ठ (33 मंत्र) लिखवायें। तब से अब तक श्री सुशील जी पूज्य गुरुदेव के निर्देश का पूरी निष्ठा के साथ पालन कर रहे हैं। 31 जनवरी 2023 को वे अतिरिक्त निदेशक, आयुर्वेद चिकित्सा विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। जिसकी बच्चे की पढ़ने में बिलकुल रुचि नहीं थी, वह बालक गुरुकृपा एवं गायत्री मंत्र लेखन के प्रभाव से इतने बड़े पद पर पहुँचा।

सेवानिवृत्ति पर श्री सुशील पाराशर जी का सम्मान

4 फरवरी 2023 को भरतपुर में श्री सुशील पाराशर जी का सेवानिवृत्ति समारोह आयोजित हुआ। उनके मधुर व्यवहार के प्रभाव से कई संगठनों से जुड़े महानुभाव, भरतपुर के कई वर्तमान और पूर्व सांसद, विधायक तथा श्री सुभाष गर्ग, राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार समारोह में सम्मिलित हुए।

श्री सुशील पाराशर जी गायत्री परिवार ट्रस्ट भरतपुर के उप प्रबंध ट्रस्टी की जिम्मेदारी सँभाल रहे हैं। उन्होंने अपना अधिकतर समय और अपनी योग्यता को गायत्री परिवार के स्वास्थ्य संवर्धन आन्दोलन के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया है। वे सभी को अपनी समस्याओं के समाधान तथा जीवन के उत्कर्ष के लिए मंत्र लेखन के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

होली पर अवांछनीयताओं के उन्मूलन एवं आदर्शों की प्रतिष्ठा के प्रशंसनीय प्रयास

प्रगतिशील आध्यात्मिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया

नवसस्येष्टि यज्ञ के रूप में किया होलिका दहन; काष्ठ नहीं, कण्डों से बनाई होलिका

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर खीरी द्वारा होली पर्व वैदिक विधि-विधान के साथ नवसस्येष्टि यज्ञ के रूप में मनाया गया। होलिका दहन का कार्यक्रम मोहल्ला श्रीराम नगर कॉलोनी (बड़खेरवा) में आयोजित हुआ। प्रज्ञा टोली द्वारा गाय के उपलों से तैयार की गई होलिका का यज्ञ भाव के साथ पूजन और दहन किया गया। मुख्य पूजन डॉ. इरा श्रीवास्तव एवं डॉ. डीएन मालपानी ने किया।

लोगों ने होलिका दहन से पूर्व पर्व का दर्शन समझा। श्री अनुराग मौर्य ने पर्यावरण संकट के इस दौर में वन्य सम्पदा के अनावश्यक दहन से बचने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि होली में उपलों का प्रयोग स्वावलंबन एवं गोवंश संरक्षण अभियान को बल देने वाला है।

होलिका दहन के अवसर पर सभी के मंगल एवं सुख-समृद्धि, आपसी प्रेम और सौहार्द की प्रार्थना की गई। उल्लास भरे गीतों के बीच एक-दूसरे को शुभकामनाएँ दी गईं।

लखीमपुर खीरी में आयोजित होलिका दहन समारोह

भण्डारा। महाराष्ट्र

भंडारा में अखिल विश्व गायत्री परिवार की युवा टीम ने वैदिक विधि-विधान के साथ अभद्रता निवारण व नशामुक्ति की प्रेरणाओं से युक्त ईको फ्रेंडली होलिका दहन पर्व मनाया। होलिका में लकड़ियों की जगह गोबर के उपलों का प्रयोग किया गया। होलिका दहन के समय सभी प्रतिभागियों ने गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए हवन सामग्री, घी और कपूर की यज्ञ आहुतियाँ प्रदान कीं। यह प्रदूषण व कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद करता है और स्वास्थ्यवर्धक-सुरक्षित होता है।

होलिका पर्वोत्सव यज्ञीय जीवन जीने की प्रेरणाएँ प्रदान करने वाला है। होलिका का दर्शन समझाते हुए श्रद्धालुओं से कहा गया कि होलिका दहन अधोगामी, पतनोन्मुख मानवीय वृत्तियों को भस्म कर देवत्व के प्रति आस्था जगाने का पर्व है। यह सामाजिक विविधता में एकता के भाव विकसित करता है।

होलिका दहन के समय उपस्थित लोगों को मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ एवं युगसाहित्य वितरित किया गया। सभी प्रतिभागियों ने प्रतिदिन गायत्री साधना करने के संकल्प लिए। पर्व को प्रेरणादायी बनाने में डॉ. विक्रम कात्रे, श्री सुरेंद्र सेलोकर, श्री राजीव शक्करवार, श्री संदीप सथावणे, सोनवाने, तितिरमारे, नारायणपुरे दम्पति, श्रीमती चांडेकर आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्राकृतिक रंगों के साथ खेली होली

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार बुरहानपुर द्वारा श्री कृष्ण मंगल परिसर में प्राकृतिक रंगों के साथ होली खेली गई। इसमें लगभग 3000 लोगों ने भाग लेकर विशेष आनन्द लिया। प्रचुर मात्रा में रंग उपलब्ध कराया गया। होली के पावन त्यौहार को उसके मूल मनभावन स्वरूप में समाज में प्रस्तुत करने के इस प्रयास को नगर के प्रबुद्धजीवी वर्ग ने बहुत सराहा। जो परहेज करते थे, वे भी खेलते नजर आए।

प्राकृतिक रंग

टेसू के फूलों से केसरिया
हल्दी से पीला
अष्टगंध, मुल्तानी मिट्टी से पीला
चुकंदर से लाल
नीम, पुदीना व पालक से हरा
काली मिट्टी व राख से काला
गोपी चंदन से सफेद

बुरहानपुर में प्राकृतिक रंगों के साथ खेली गई होली

होली के उल्लास में खिले बंदियों के मन

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश

5 मार्च को गायत्री चेतना केंद्र चिलबिला द्वारा जिला कारागार प्रतापगढ़ में बंदियों के बौद्धिक एवं मानसिक लाभ हेतु संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। होली की वेला में बंदियों में उमंग-उल्लास जगाकर उन्हें आत्मसुधार की दिशा में अग्रसर करने के प्रशंसनीय प्रयास हुए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री मंत्र एवं ''आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन ...'' जैसे प्रेरक गीत-संगीत से हुआ। बंदियों को होली की बधाई दी गई एवं अबीर, गुलाल का तिलक लगाकर, मिष्ठान खिलाकर उनके मंगलमय जीवन की कामना की गई। गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका एवं अखंड ज्योति, युग निर्माण पत्रिका का वितरण भी किया गया और उसका लाभ भी बताया गया। कार्यक्रम में बंदियों को नशा छोड़ने और नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणाएँ प्रमुखता से दी गईं।

इस आयोजन में जेल प्रशासन के साथ प्रज्ञा मण्डल रानीगंज प्रतापगढ़ और गायत्री धाम सिपाहमहेर नौबस्ता के गायत्री परिव्राजक और कार्यकताओं का प्रशंसनीय सहयोग मिला।

होली पर अश्लीलता, अशिष्टता एवं व्यसन उन्मूलन का संदेश

वाराणसी में आकर्षक ढंग से दिया गया अवगुण निवारण का संदेश

जतारा में अश्लीलता का दहन

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ नगवां, लंका, वाराणसी से जुड़े पांडेयपुर युवा मंडल के सदस्यों ने 7 मार्च 2023 को होलिका दहन पर्व मनाते हुए तेजी से व्यसन और अश्लीलता की गिरफ्त में आ रहे समाज, विशेष रूप से युवाओं को इस आत्मघाती प्रवृत्ति के प्रति चेताया। उन्हें संदेश दिया कि नशा उनके जीवन को अंधकारमय बना रहा है और अश्लीलता के प्रति आकर्षण समाज को दूषित कर रहा है। यह पर्व मन से दूषित विचार हटाकर सद्विचारों की स्थापना करने तथा व्यसन से बचाकर सृजन में लगाने की प्रेरणा देता है।

होलिका दहन का पर्व नवान्न यज्ञ के रूप में भी मनाया गया। गेहूँ व जौ की बाली और हरा चना यज्ञ भगवान को समर्पित कर प्रसाद स्वरूप लोगों को वितरित किया गया। एक आदर्श के रूप में गोबर के उपले और पुआल की होलिका जलाई गई।

श्री बृजेश चौहान के अनुसार युवा मंडल ने व्यसन और अश्लीलता मुक्ति संबंधी सद्वाक्य की तख्तियाँ और बैनर लेकर क्षेत्र में जनजागरण रैली भी निकाली।

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

दिया, जतारा ने 'होली मनाओ-अश्लीलता हटाओ' के नारे के साथ होली पर्व मनाया। होल से पहले जनजागरूकता रैली निकालकर क्षेत्र में अवांछनीयता और अश्लीलता विरोधी संदेश दिया गया। तत्पश्चात् शाम को नगर की उपज मण्डी के पास अश्लील चित्र, पोस्टरों के प्रतीकात्मक पुतले का दहन कर होली मनाई गई। इस अवसर पर युवाओं को भटकावों से बचने और सुरदुर्लभ जीवन का सदुपयोग करने की प्रेरणा दी गई।

विले पार्ले, मुम्बई। महाराष्ट्र

ऋतंभरा महिला मंडल, विले पार्ले ने इस वर्ष होलिका दहन पर्व अश्लीलता निवारण, व्यसन मुक्ति एवं अशिष्टता उन्मूलन दिवस के रूप में मनाया। पिपलेश्वर महादेव मंदिर, विले पार्ले के मैदान में प्रगतिशील प्रेरणाओं के साथ होलिका दहन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। बाल संस्कार शाला के बच्चों को स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए सुरक्षित प्राकृतिक रंगों का उपयोग करने, फूल, प्लास्टिक या गुब्बारे नहीं फेंकने की प्रेरणा और संकल्प दिलाए गए। श्रद्धालुओं को दैनिक जीवन में अभद्रता और अश्लीलता त्यागने का निवेदन किया गया। नशा और भांग की बुरी लत से दूर रहने का आग्रह भी किया गया। कई छात्रों ने अपनी बुराइयों को पर्ची पर लिखकर उनका होलिका में दहन किया। होलिका दहन स्थल पर अभद्रता और नशाखोरी त्यागने की प्रेरणा देने वाले चार्ट का प्रदर्शन भी किया गया।

विले पार्ले में अवांछनीयताओं को न अपनाने का संकल्प कराया

गढ़पुरा में निकाली गई नशेड़ी की शवयात्रा

जो नशे का हुआ शिकार, उजड़ा उसका घर परिवार। नशा धीमी आत्महत्या है।

गढ़पुरा, बेगूसराय। बिहार

होली पर व्यसनमुक्त समाज का संदेश देने के लिए गढ़पुरा में नशा निवारण अर्थी शोभायात्रा का आयोजन किया गया। अर्थी के साथ संपूर्ण बाजार का भ्रमण करने के पश्चात् चंद्रभागा नदी के तट पर उसका अंतिम संस्कार किया गया। इस शोभायात्रा में नारे, तख्तियों पर लिखे वाक्यों के माध्यम से नगरवासियों को शराब पीने से होने वाली दुर्गति का स्मरण कराया गया, भूखे मरते परिवारों के दर्शन कराए गए।

कई लोग नशामुक्त हुए

परिजनों ने बताया कि गायत्री मंदिर गढ़पुरा की ओर से नशे के विरुद्ध कई वर्षों से निरंतर अभियान चलाया जा रहा है। समाज पर इसका प्रभाव भी पड़ रहा है। अनेक लोग हैं, जिन्होंने ऐसे कार्यक्रमों में नशामुक्ति के संकल्प लिए और उन्हें निभाकर नशामुक्त हो गए। सर्वश्री सुशील कुमार सिंघानिया, महात्मा विशुन, कुमार संजीव, संजीव पोद्दार, विमलेश झा सहित बड़ी संख्या में युवा नशामुक्ति अभियान को प्रभावी बनाने के प्रयासों में जुटे हैं।

मलेशिया में दीपयज्ञ के माध्यम से दिया संदेश

क्वालालंपुर। मलेशिया : गायत्री परिवार मलेशिया ने होली पर्व (फाल्गुन पूर्णिमा) के उपलक्ष में मरियममन देवी मंदिर में दीपयज्ञ का आयोजन किया और उसके साथ होली की पवित्र प्रेरणाओं का संदेश दिया। दक्षिण पूर्वी गायत्री परिवार मलेशिया से श्री हेमंत वर्मा ने दीपयज्ञ का संचालन किया। स्थानीय वरिष्ठ सामाजसेवी श्री करुणाकरन जी, सेल्वी जी ने प्रशंसनीय सहयोग दिया। होली के रंगों के साथ सभी को शुभ कामनाएँ दी गईं।

मरियममन देवी मंदिर में हर माह दीपयज्ञ आयोजन की परम्परा विगत एक वर्ष से भी अधिक समय से चल रही है। इसमें भाग लेकर श्रद्धालु एक नई ऊर्जा और उमंग का अनुभव कर रहे हैं।

शिवरात्रि : प्रज्ञेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा

बरघाट, सिवनी। मध्य प्रदेश

महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ बरघाट में प्रज्ञेश्वर महादेव (शिवलिंग) की प्राण प्रतिष्ठा, प्रज्ञा पुराण एवं दीपयज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम दिनांक 17 से 20 फरवरी तक 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं दीपयज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ।

यक कार्यक्रम श्री प्रभाकांत तिवारी की टोली ने सम्पन्न कराया। टोली ने श्रद्धालुओं को शिव का दर्शन समझाने के साथ इस युग में परम पूज्य गुरुदेव के रूप में मानवता का उद्धार करने के लिए अवतरित दिव्य चेतना को पहचानने का आह्वान किया। स्वयं महाकाल के हीरे-मोती बनकर सौभाग्य के वरण की प्रेरणा दी। गायत्री परिवार के सप्त आन्दोलन और जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। 35 गुरुदीक्षा सहित विविध संस्कार हुए।

यज्ञ संचालन करती श्री प्रभाकांत तिवारी की टोली

महिला सशक्तीकरण दिवस : उत्साह जगाया, आत्मविश्वास बढ़ाया

दहिसर, मुम्बई। महाराष्ट्र

दहिसर स्थित प्रज्ञा केंद्र में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। बहिनों को उनकी क्षमता का एहसास करना और अश्वमेध यज्ञ में योगदान देने के लिए प्रेरित करना इसका उद्देश्य था। केंद्र में प्रतिदिन योग करने आने वाली महिलाओं ने बताया कि कैसे योग ने उन्हें लाभ पहुँचाया है। इस संदर्भ में उन्होंने कई रोचक प्रसंगों की चर्चा की। सभी प्रतिभागियों ने गायत्री अनुष्ठान करने और अनुशासित जीवन जीने का संकल्प लिया। दीप यज्ञ और गायत्री मंत्र के सामूहिक जप के कार्यक्रम ने गायत्री चेतना के साथ एकात्मता की गहन अनुभूति कराई।

उज्ज्वल भविष्य के लिए चाहिए तुम्हारे समग्र जीवन का रूपान्तरण

प.पू. गुरुदेव के आगमन की स्मृति में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने दिया संदेश

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी मंचासीन यज्ञ संसद के बीच दीपयज्ञ के अवसर पर श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए

घेगाँव, खरगोन। मध्य प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव 50 वर्ष पूर्व अपने निमाड़ प्रवास में घेगाँव गये थे। उनके स्नेह और अनुदानों के परिणाम से इस गाँव ने शान्तिकुञ्ज को सुप्रसिद्ध युगगायक श्री गोविंद पाटीदार (काकाजी) एवं श्री लक्ष्मीचंद राठौड़ के रूप में कर्मठ जीवनदानी दिए। उनका पूरा परिवार मिशन की सेवा कर रहा है। इतना ही नहीं, निमाड़ क्षेत्र ने 25-30 जीवनदानी कार्यकर्त्ता शान्तिकुञ्ज को दिए हैं। पूरा निमाड़ मिशन की दृष्टि से अत्यंत जीवन्त और जाग्रत् क्षेत्र है।

घेगाँव वासियों ने परम पूज्य गुरुदेव के दिव्य अनुदानों के प्रति अपनी गहन आस्था व्यक्त करते हुए दिनांक 1 से 4 मार्च 2023 की तिथियों में उनके आगमन का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया। 108 कुण्डीय यज्ञ एवं संस्कार महोत्सव के साथ अनेक कार्यक्रमों में क्षेत्र के अद्वितीय समर्पण भाव के दर्शन हुए। यह मात्र चार दिवसीय कार्यक्रम ही नहीं था, इसके माध्यम से विगत दो माह में 108 गाँवों में सघन जनजागरण अभियान भी चलाया गया।

गुरुसत्ता के प्रतिनिधि के रूप में शान्तिकुञ्ज से आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के घेगाँव में पहुँचने से पूरा क्षेत्र भावविभोर हो गया। गाँववासियों के स्नेह और पुरुषार्थ को देखकर डॉ. चिन्मय जी भी अभिभूत थे। उन्होंने दीपयज्ञ के समय गाँववासियों, विशेषकर युवाओं के पुरुषार्थ की सराहना करते हुए कहा, ''युवावस्था मानव जीवन का वह वसंत काल है, जब विधाता की दी हुई सारी शक्तियाँ सहस्रधारा बनकर फूट पड़ती हैं। हर मन उमंग और उत्साह से परिपूर्ण होता है। आज राष्ट्र युवा चेतना के उन स्वरों को खोज रहा है, जिनमें समग्र क्रान्ति एवं नए इतिहास की रचना का गान प्रस्फुटित होगा। अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो। राणा, शिवा, भगतसिंह और झाँसी की रानी के वक्त का मंत्र पढ़ो। अब 21वीं सदी में उज्ज्वल भविष्य के लिए चाहिए तुम्हारे समग्र जीवन का रूपान्तरण।''

यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री और यज्ञ का दर्शन समझाया। उन्होंने कहा कि दुर्बुद्धिग्रस्त मानवता को परिष्कृत करने के लिए गायत्री उपासना अनिवार्य है। जैसे गंगा स्नान से पवित्रता, शान्ति, शीतलता, आर्द्रता को हृदयंगम करने की प्रेरणा मिलती है, वैसे ही यज्ञ से तेजस्विता, प्रखरता, परमार्थपरायणता एवं उत्कृष्टता का प्रशिक्षण मिलता है। जिन घरों में और जिन स्थानों में यज्ञ होते हैं, वह भी एक प्रकार से तीर्थ बन जाते हैं।

कार्यक्रम संचालन शान्तिकुञ्ज से पहुँची सर्वश्री परमानन्द द्विवेदी, गोविंद पाटीदार दिनेश पटेल, ओंकार पाटीदार, बसंत यादव, मायाचंद भारद्वाज, मंगल गढ़वाल की टोली ने किया।

गुरुस्मारकों का लोकार्पण

घेगाँव के स्वर्ण जयन्ती समारोह में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के पावन स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा -सजल श्रद्धा' सहित एक टीनशेड का निर्माण कराया गया है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इनका लोकार्पण किया। इस अवसर पर घेगाँव के मूल निवासी एवं वर्तमान में भोपाल में रह रहे प्राणवान कार्यकर्त्ता एवं मुख्य दानदाता डॉ. शंकरलाल पाटीदार विशेष रूप से उपस्थित रहे।

युगऋषि की मंगलमयी योजना के साथ 108 गाँवों में चला जनजागरण अभियान

7 करोड़ 51 लाख मंत्र जप व सवा लाख मंत्र लेखन

सभी 108 गाँवों में 50 दिन पूर्व से शक्ति कलशों के सामने आरंभ हुआ सामूहिक जप अनुष्ठान। कुल 900 शक्ति कलश स्थापित किए गए। उनके समक्ष 50-50 भाई-बहिनों ने प्रतिदिन रात्रि 7.30 से 8.30 तक जप किया। 7 करोड़ 51 लाख गायत्री महामंत्र का जप एवं 1,25,000 गायत्री मंत्रलेखन हुआ।

- 108 गाँवों में रजवंदन समारोह हुए। हर गाँव में गौरज, तुलसी वृंदावन की रज, पावन भूमि व जलस्रोतों का पूजन-वंदन हुआ। चार ज्ञानरथ टोलियों ने 27-27 गाँवों में आयोजित किए गए रजवंदन समारोह।
- सभी 108 गाँवों के साधकों की भागीदारी रही। हर कुण्ड पर अलग-अलग गाँवों के पाँच-पाँच जोड़ों ने दूसरे दिन के विशिष्ट देवपूजन में भाग लिया।
- सभी गाँवों में विभिन्न मण्डलों का गठन कर उन्हें नियमित सामूहिक साधना, रचनात्मक आन्दोलन, पत्रिकाओं के विस्तार एवं स्वाध्याय के माध्यम से युग चेतना को निरंतर प्रखर करते रहने की योजना बनाई गई और जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं।

कार्यक्रम की विशिष्ट झलकियाँ, उल्लेखनीय प्रसंग

- कलश यात्रा में सभी 108 गाँवों की बहिनें जिन कुल 900 कलशों के सान्निध्य में साधना अनुष्ठान किए गए थे, उन्हें लेकर शामिल हुईं। गाँव-गाँव से दो समूहों में शक्ति कलश शोभायात्रा यज्ञस्थल पर पहुँची।
- घेगाँव वासियों ने अतिथि भाव का अद्भुत परिचय दिया। गाँववालों ने अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था अपने ही घर कर ली थी। वे गली से गुजरने वाले अतिथियों का हाथ जोड़कर स्वागत करते नजर आए।
- गाँव के हर द्वार पर रंगोली बनाई गई, सायंकाल दीप जलाए गए।
- यज्ञ स्थल पर भव्य प्रदर्शनी, देवात्मा हिमालय, माँ गंगा, 12 ज्योतिर्लिंग आदि की अत्यंत मनमोहक झाँकियाँ बनाई गई थीं।
- पूर्णाहुति के दिन लगभग 500 लोगों ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली। 551 घरों में देवस्थापनाएँ हुईं।
- दोपहरकालीन सत्र में ऋषि-कृषि और जल, जंगल, जमीन विषय पर आयोजित सम्मेलन स्थानीय किसानों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। इसे जबलपुर से आए कृषि वैज्ञानिक श्री ताराचंद जी ने सम्बोधित करते हुए बड़ी उपयोगी बातें बताईं।
- नारी सशक्तीकरण के लिए विशेष सम्मेलन हुआ, जिसे इन्दौर से आई सुश्री प्रज्ञा पाराशर ने सम्बोधित किया।
- रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया गया था। मनावर के श्री सोहनलाल पाटीदार भवरिया, जिन्होंने हजारों लोगों को रक्त दिलवाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया, इस शिविर में उपस्थित रहे।

शिक्षा विद्यार्थियों को प्रामाणिक, प्रखर, संवेदनशील बनाये

पुस्तक विमोचन इन्दौर की कार्यशाला में पुस्तक 'प्रांतीय शिक्षा आंदोलन का सशक्तीकरण' का विमोचन करते आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

इन्दौर। मध्य प्रदेश

आज देश में विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों की बाढ़ आई हुई है। वे प्रमाणपत्र तो दिलवा रहे हैं, लेकिन विद्यार्थियों में प्रामाणिकता का अभाव ही बना रहता है। एक समय था जब हमारे देश में नालंदा और तक्षशिला जैसे शिक्षा संस्थानों में पूरे विश्व के लोग आते थे जीवन जीने की कला सीख कर जाते थे और पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति के आदर्शों को फैलाया करते थे।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 5 मार्च 2023 को गायत्री चेतना केंद्र इंदौर में आयोजित प्रांतीय शिक्षा आंदोलन सशक्तीकरण कार्यक्रम में यह संदेश दिया। यह कार्यक्रम म.प्र. में प्रारम्भ हुए एक नवाचार 'शिक्षक उन्मुखीकरण कार्यशाला तथा पालक प्रबोधन' के अन्तर्गत आयोजित किया गया था।

माननीय डॉ. चिन्मय जी ने इस अभिनव पहल का स्वागत किया, साथ ही अनेक

शिक्षक उन्मुखीकरण कार्यशाला में 1000 शिक्षाविदों ने भाग लिया

प्रासंगिक उद्धरणों, उदाहरणों के साथ आज शिक्षा के गिरे हुए स्तर पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आज के शिक्षालय अधिकतम अंक प्राप्त करके अधिक से अधिक पैसा कमाने की ट्रिक सिखा रहे हैं। विडंबना यह है कि अभिभावक भी अपने बच्चों को पैसे कमाने की मशीन ही बनाना चाह रहे हैं।

माननीय प्रतिकुलपति डॉ. पण्ड्या जी ने इस अभिशप्त, क्षुब्ध वातावरण में गायत्री परिवार को आशा की किरण बताया। उन्होंने कहा कि शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित देव संस्कृति विश्वविद्यालय एक ऐसा विश्वविद्यालय है, जहाँ विद्यार्थियों के जीवन में मानवीय मूल्यों को उतारने का भरपूर प्रयास किया जाता है। उन्होंने गायत्री परिवार द्वारा संचालित बाल संस्कार शाला, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आदि समानान्तर शिक्षा योजनाओं को छोटा ही सही, परन्तु प्रभावी कदम बताया।

इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण मध्य प्रदेश के चयनित 100 से अधिक विद्यालयों के संचालक, प्राचार्य तथा शिक्षक आदि लगभग 1000 शिक्षाविद् सम्मिलित हुए। शिक्षक उन्मुखीकरण कार्यशाला का प्रगति प्रतिवेदन आंदोलन के सहयोगी श्री भगवानदास बिर्ला ने प्रस्तुत किया। संचालन प्रांतीय शिक्षा आन्दोलन (म.प्र.) के समन्वयक श्रीकृष्ण शर्मा व सहयोगी श्री राजेंद्र जैन महावीर ने किया। श्री कोमलप्रसाद ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

गायत्री परिवार की ओर से मध्य जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि, श्री राजेश पटेल, प्रान्तीय समन्वयक, भोपाल, श्री आर. के. गुप्ता, समन्वयक शक्तिपीठ प्रकोष्ठ म.प्र., श्री विवेक चौधरी प्रांतीय संयोजक युवा प्रकोष्ठ, श्री जे.पी.यादव उपजोन इंदौर समन्वयक, श्री पन्नालाल बिर्ला, उपजोन समन्वयक खंडवा भी उपस्थित थे।

घेगाँव में घर-घर गए आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

इस कार्यक्रम में घेगाँव वासी अपनी पावन गुरुसत्ता के अनुदानों की स्मृतियों से भावविभोर थे, वहीं आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गाँव वासियों की श्रद्धा और उनके समर्पण भाव से अभिभूत थे। वे गाँव की गलियों से पैदल गुजरते हुए प्राणवान कार्यकर्त्ताओं के घर पहुँचे, श्रद्धेय डॉ. साहब, जीजी की ओर से उन्हें आशीर्वाद दिए, घर के सदस्यों पर स्नेहवर्षा की, अकूत आत्मीयता प्रदान की। आत्मीयता संवर्धन का यह क्रम अत्यंत हृदयस्पर्शी था।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी श्री गोविंद पाटीदार एवं श्री मेवालाल पाटीदार के घर उनके परिवारी जनों के संग

वृक्षारोपण कार्यों की सराहना की

निमाड़ क्षेत्र पर्यावरण संरक्षण की दिशा में आदर्श गतिविधियाँ चला रहा है। परिजनों के साझा प्रयासों से वहाँ कई पहाड़ियों को हराभरा किया जा चुका है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने प्रस्तुत प्रवास में गायत्री परिवार कसरावद द्वारा पहाड़ी पर किए गए वृक्षारोपण कार्यों का अवलोकन, कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

रोपे गए 5000 पौधे

5 मार्च के दिन उमरी पहुँचे, जहाँ 5000 से अधिक पौधों का रोपण हुआ था। वहाँ परिजनों के रचनात्मक कार्यों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि यह संगठित देवत्व ही संसार में स्वर्ग की सृष्टि करेगा।

कसरावद शाखा द्वारा पहाड़ी पर किया गया वृक्षारोपण

आदरणीय डॉ चिन्मय पण्ड्या जी का मालवा-निमाड़ प्रवास

(पृष्ठ 6 के पूरक समाचार)

धूलकोट में वनवासियों को संदेश

युग परिवर्तन में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी 4 मार्च को धूलकोट के आइ फाटा में चल रहे 24 कुण्डीय यज्ञ एवं नारी जागरण सम्मेलन में भाग लेने पहुँचे। वहाँ हजारों की संख्या में आदिवासी भाई-बहिनों ने अपनी पारम्परिक वेशभूषा में गाते-बजाते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत किया। उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में गुरुदेव की कृपा और डेमनिया बाबा की प्रेरणा से लाखों वनवासियों का जीवन बदला है।

आद. डॉ. चिन्मय जी धूलकोट की सभा को संबोधित करते हुए

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने वनवासियों को शान्तिकुञ्ज का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि अपने सरल और निश्छल स्वभाव के कारण आप ईश्वर के बहुत समीप हैं। आपने असुरों को मारने के लिए जिस प्रकार भगवान राम का साथ दिया था, उसी प्रकार इस युग के श्रीराम के युग परिवर्तन के महान संकल्प को पूरा करने में आपकी अहम भूमिका होगी। 24 कुण्डीय यज्ञ एवं नारी जागरण सम्मेलन का संचालन शान्तिकुञ्ज से पहुँची ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने किया।

धूलकोट के यज्ञ में संदेश देने के पश्चात् आदरणीय डॉ. चिन्मय जी वनवासियों के उत्थान के लिए समर्पित बाबा रूप सिंह के गाँव पहुँचे, उनकी कुशलक्षेम जानी। उन्हें देवस्थापना चित्र भेंट किया।

अनेक शक्तिपीठ-गायत्री संस्थानों में संदेश

3 से 5 मार्च की तिथियों में निमाड़-मालवा क्षेत्र में पहुँचे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने घेगाँव के 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, धूलकोट के यज्ञ-सम्मेलन और इन्दौर की शिक्षा संगोष्ठी के अलावा खरगोन, धार जिले के अनेक शहर-गाँवों का प्रवास किया।

3 मार्च को प्रवास का शुभारम्भ शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता युगगायक श्री ओंकार पाटीदार के गाँव बगवाँ से हुआ। आद. डॉ. चिन्मय जी श्री ओंकार जी के छोटे भाई स्वर्गीय कमल पाटीदार को श्रद्धांजलि देने पहुँचे। वहाँ उन्होंने घर के सदस्यों की कुशलक्षेम पूछी वहीं वयोवृद्ध माताजी ने उन्हें बहुत आशीर्वाद दिये। ग्राम बगवां के युग प्रवर्तक महाकाल मंदिर में परिजनों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने मंदिर के दर्शन कर चरण पादुका पर पुष्पांजलि अर्पित की।

4 मार्च को धूलकोट के बाद खरगोन जिले के बिष्टान, रणगांव, कसरावद एवं धार जिले के धरमपुरी, मनावर, सिंघाना के विभिन्न गायत्री संस्थानों में पहुँचे और उन्होंने स्थानीय परिजनों, कार्यकर्त्ताओं से भेंट कर उन्हें संबोधित किया।

4 मार्च को धार जिले के खंडवा, कुक्षी, डेहरी, गंधवानी स्थित विभिन्न गायत्री संस्थानों में पहुँचकर कार्यकर्त्ताओं में नए उत्साह का संचार किया, संकल्प जगाए।

तीन दिवसीय प्रवास में मध्य जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि, मध्य जोन प्रभारी श्री राजेश पटेल, प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ संयोजक श्री विवेक चौधरी, आद. डॉ. चिन्मय जी के सहयोगी श्री रामावतार पाटीदार आदि साथ रहे।

ग्राम बगवाँ में श्री ओंकार पाटीदार के परिजनों के संग एवं वृद्ध माता से आशीर्वाद लेते हुए

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी मनावर में कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए

नैष्ठिक साधिका, समर्पित कार्यकर्त्ता स्व. श्रीमती साधना पारे को श्रद्धाञ्जलि

तीन दिवसीय प्रवास का शुभारंभ इन्दौर से हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का देवी अहिल्याबाई होलकर एअरपोर्ट, इंदौर पहुँचने पर कार्यकर्त्ताओं द्वारा भव्य स्वागत हुआ। तत्पश्चात् वे सबसे पहले माननीय न्यायाधीश श्री अनिल पारे के घर पहुँचे, उनकी दिवंगत धर्मपत्नी श्रीमती साधना पारे को भावभरी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। उल्लेखनीय है कि स्व. श्रीमती साधना पारे गायत्री की नैष्ठिक साधिका एवं मिशन की समर्पित कार्यकर्ता थीं।

गुरुसत्ता की आशाओं पर खरे उतरने का संकल्प लेकर लौटे गुजरात के प्राणवान परिजन

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया जीजी ने बताए संकल्प सिद्धि के सूत्र

समर्पण एवं समन्वय कौशल के साथ मजबूत हो संगठन

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में 28 फरवरी से 4 मार्च 2023 तक गुजरात प्रान्त का राष्ट्रीय सक्रिय कार्यकर्ता शिविर चला। पूरे गुजरात से आए लगभग 650 प्राणवान कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया। समग्र शिविर सक्रियता, सुव्यवस्था और संकल्प की दृष्टि से स्वयं में एक आदर्श था। शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ताओं ने शिविर की जो सुन्दर व्यवस्थाएँ की थीं, उसे सभी ने एकमत से सराहा।

परम पूज्य गुरुदेव की गुजरात के प्रति मान्यता और अपेक्षाओं की याद कार्यकर्त्ताओं को दिलाई गई। उल्लेखनीय है कि परम पूज्य गुरुदेव गुजरात को अपना बड़ा बेटा कहा करते थे। इस शिविर ने युग परिवर्तन के महायज्ञ में और आगामी जन्मशताब्दी वर्ष की योजनाओं में उसी स्तर की भूमिका निभाने के लिए कार्यकर्त्ताओ को प्रेरित किया, संकल्प उभरे।

श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी ने सभी से व्यक्तिगत भेंट की। सभी की कुशलक्षेम पूछने के साथ सफलता और संकल्प सिद्धि के लिए मार्गदर्शन भी किया। उन्होंने कहा कि युग परिवर्तन जैसे महान लक्ष्य के लिए अपने आराध्य के प्रति समर्पण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि समर्पण सच्चा है तो अपने साथियों की तमाम कमियों के रहते हुए भी उनकी विशेषताओं का उपयोग करने का कौशल आ ही जाता है। उन्होंने कहा कि परस्पर समन्वय और संगठित प्रयासों से बड़े से बड़ा लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

पहले दिन कार्यक्रम का शुभारंभ आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के उद्बोधन से हुआ। (समाचार गत अंक में प्रकाशित हुए हैं।) शान्तिकुञ्ज के प्रायः सभी वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने अलग-अलग विषयों पर मार्गदर्शन दिया।

डॉ. ओ. पी. शर्मा जी ने गुरुदेव की इच्छा को ही अपनी इच्छा बनाकर हर व्यक्ति तक उनका संदेश पहुँचाने का आग्रह किया। प्रो. प्रमोद भटनागर ने कहा कि गुरुदेव एक विचार हैं। विचारों की कोई जाति, कोई धर्म नहीं होता। हमें इन विचारों को समाज के हर व्यक्ति तक पहुँचाना है। हर व्यक्ति के विचारों को सही दिशा में मोड़ना है।

आदरणीया शेफाली जीजी ने नारी सशक्तीकरण और सुश्री दीना त्रिवेदी ने व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के सूत्र समसामयिक और अत्यंत व्यावहारिक उदाहरणों के साथ समझाये।

गुजरात के प्रान्तीय संगठन की ओर से श्री अश्विनभाई जानी, श्री जयेशभाई बारोट, श्री रमेशभाई जोशी आदि ने सत्र की व्यवस्थाओं के प्रति जोन समन्वयक डॉ.ओ.पी. शर्मा, कार्यक्रम विभाग समन्वयक श्री श्याम बिहारी दुबे और विशेष रूप से गुजरात जोन समन्वयक श्री उदयकिशोर मिश्रा की पूरी टीम के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया। समग्र कार्यशाला का सार समझाते हुए उन्होंने नारा दिया- ''पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना है तो हमें जनसंपर्क बढ़ाना है।'' इस संदर्भ में गुजरात के कार्यकर्त्ताओं ने शानदार संकल्प लिए।

शिविर का समापन श्री शिव प्रसाद मिश्रा जी के विदाई संदेश के साथ हुआ। उन्होंने प्रहलाद, मीरा, एकलव्य जैसे भक्तिभाव के साथ गुरुसत्ता का ऋण चुकाने और समाज के दुःख-दर्द को मिटाने के संकल्प के साथ जनजागरण अभियान में जुट जाने की प्रेरणा दी।

प्रमुख संकल्प

195	यज्ञ (24 से 108 कुण्डीय तक)
2001	यज्ञ (5 एवं 9 कुण्डीय तक)
30,832	देवस्थापनाएँ
5,654	सद्ग्रंथ स्थापना
4,75,950	विद्यार्थी की भासंज्ञाप में भागीदारी
616	ग्रामतीर्थ यात्राएँ
781	विविध प्रकार के प्रशिक्षण शिविर
23,201	युगशक्ति गायत्री की सदस्यता
22,903	प्रज्ञा अभियान की सदस्यता
275	बाल संस्कार शाला संचालन
49,541	वृक्षारोपण
1,021	विविध प्रकार के शिविर, सम्मेलन

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्रीमती चंद्रकान्ता शर्मा, गौतमबुद्ध नगर। उ.प्र.

मिशन के लिए समर्पित साधिका श्रीमती चंद्रकांता शर्मा का 6 मार्च 2023 को निधन हो गया। वे 93 वर्ष की थीं। वे अपने पूरे परिवार को मिशन में सक्रियता के लिए निरंतर प्रेरित करती रहीं। उनकी प्रेरणा से ही उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री संदीप शर्मा, अधिवक्ता 10 वर्षों तक सपरिवार शान्तिकुञ्ज में रहे और लीगल सैल में सेवाएँ प्रदान कीं।

श्री सुंदर लाल कौशिक जांजगीर-चांपा। छ.गढ़

ग्राम कमरीद निवासी श्री सुंदर लाल कौशिक का 27 फरवरी 2023 को 67 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। वे विगत पाँच वर्षों से विभिन्न शक्तिपीठों में सपत्नीक सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। उन्होंने अधिकांश समय गायत्री प्रज्ञापीठ एवं देव संस्कृति विद्यालय, चिल्हाटी में दिया।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा में विशिष्ट सम्मेलन/शिविर

युग निर्माता शिक्षक सम्मेलन : दिनांक 23 से 26 मई, 2023

गायत्री तपोभूमि के दिव्य वातावरण में दिनांक 23 मई से 26 मई, 2023 तक की तिथियों में युग निर्माता शिक्षक सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में भाग लेने वाले शिक्षक बंधुओं को 22 मई की सायंकाल तक अवश्य पहुँचना है। 26 मई को दोपहर बाद विदाई हो जाएगी। यदि मथुरा-वृंदावन के दर्शन हेतु जाना चाहते हैं, तो सम्मेलन से पहले या बाद में एक-दो दिन रुक जाएँ। जो शिक्षक बंधु और बहिनें आ रही हैं, उनके नाम, पते, मोबाइल नंबर ई-मेल अथवा डाक से अवश्य भेज दें। अवकाशप्राप्त शिक्षकों को अवश्य लाएँ, ताकि उनके वानप्रस्थ जीवन का सदुपयोग हो सके।

माता सरस्वती शिविर [केवल 14 से 20 वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए]

लड़कों का शिविर : दिनांक 01 जून से 07 जून, 2023

लड़कियों का शिविर : दिनांक 09 जून से 15 जून, 2023

यह शिविर छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से आयोजित किया गया है। इस शिविर में पढ़ने, याद करने की विधि, बुद्धि कुशाग्र करने, स्मरण शक्ति बढ़ाने, योग,आसन, प्राणायाम, ध्यान, जीवन जीने की कला, सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन का प्रशिक्षण होगा।

शिविर में भाग लेने के लिए अपना नाम, पूरा पता, आयु, शिक्षा तथा मोबाइल नंबर, ईमेल आदि विवरण सहित आवेदन करें। कृपया बिना स्वीकृति के न आएँ। उद्देश्य, अनुशासन और आवश्यक सामग्री की विस्तृत जानकारी तथा शिविर के लिए आवेदन हेतु संपर्क कीजिए।

सम्पर्क सूत्र :- युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-281003,
फोन नं० : (0565) 2530115, 2530128, 2530399
मोबाइल : 09927086287, 09927086289, 9412171035 (वाट्सअप)
ई. मेल : yugnirman@yugnirmanyojna.org

होलिका दहन से पूर्व संदेश देते श्रद्धेय डॉक्टर साहब

होली तन ही नहीं, मन को भी प्रेमभाव से रंगने का पर्व है

– श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने होली पर्व उसकी मूल भावना के अनुरूप पूरे आदर्श व अनुशासन के साथ मनाया। 7 मार्च की सायं दीपयज्ञ के साथ होलिका दहन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज परिवार के अभिभावक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी की प्रमुख उपस्थिति में समस्त पूजन क्रम सम्पन्न हुआ।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने श्रद्धालुओं को पर्व की प्रेरणाओं का स्मरण कराया। उन्होंने कहा कि होली भारतीय संस्कृति में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का एक प्रमुख पर्व है। यह समरसता का पर्व है। यह अमीर- गरीब, जाति-वर्ग जैसे समस्त भेद भुलाकर परस्पर गले मिलने और मनमुटाव मिटाने का पर्व है। इस अवसर पर होली के साथ जुड़ गई नशा जैसी तमाम विकृतियों की चर्चा करते हुए उनसे बचने तथा सुगंधित, प्राकृतिक हानिरहित रंगों के साथ होली खेलते हुए तन ही नहीं, मन की मलिनता को भी दूर करने की प्रेरणा उन्होंने दी।

होलिका दहन एवं पूजन का कर्मकाण्ड डॉ. गायत्री किशोर त्रिवेदी एवं श्री जितेन्द्र मिश्रा ने सम्पन्न कराया। हजारों आश्रमवासी, शिविरार्थियों ने विश्व के कल्याण की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ प्रदान कीं। नवसस्येष्टि यज्ञ के अंतर्गत गेंहूँ की बालों को भूनकर प्रसाद वितरित किया गया। होलिका दहन के समय श्रोतागण पूजन-परिक्रमा के साथ हर्ष और उल्लास से भरे होली के गीतों के संग झूमते रहे।

धूलिवंदन के दिन का शुभारंभ श्रद्धेय द्वय से केशर, चंदन, यज्ञभस्म का तिलक लगवाकर हुआ। सभी आश्रमवासी, शिविरार्थी और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के शिक्षक-आचार्यों ने अनुशासित भाव से भरपूर उमंग और उल्लास के साथ होली मनाई।

शान्तिकुञ्ज में होलिका दहन का दृश्य

उत्सव-2023 में 50 प्रकार की खेल एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ

जीवन भी एक खेल है, जिसे हर पल संकल्प, आशा, ऊर्जा, उमंग और उत्साह के साथ जिया जाना चाहिए। *- माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति, देसंविवि*

ऊपर : समापन समारोह में देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार को आशीर्वचन प्रदान करते कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी
नीचे : प्रथम दिवस कुलाधिपति एकादश की ओर से क्रिकेट खेलते प्रतिकुलपति जी तथा समापन दिवस पर योग प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में दिनांक 13 से 15 मार्च की तिथियों में 'उत्सव-2023' का आयोजन हुआ। खेलकूद व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं से युक्त यह वार्षिकोत्सव हर वर्ष विद्यार्थियों की क्षमता एवं प्रतिभा को उकेरने के लिए आयोजित किया जाता है।

उत्सव-2023 का 15 मार्च को भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन हुआ। समापन समारोह में कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने विद्यार्थियों के कौशल और उत्साह की सराहना करते हुए आशीर्वचन कहे। उन्होंने शारीरिक व बौद्धिक प्रतियोगिताओं के सम्मिश्रण को युवाओं में ऊर्जा एवं उत्साह बढ़ाने वाला बताया। उन्होंने कहा कि जीवन भी खेल भावना के साथ जिया जाना चाहिए, जिसमें संकल्प, आशा, उमंग, ऊर्जा हर समय बनी रहे।

प्रथम दिन विवि के कुलपति आदरणीय श्री शरद पारधी जी एवं प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कुलपताका फहराकर खेल महोत्सव का शुभारंभ किया। आदरणीय

उमंग, उत्साह से भर देने वाला है उत्सव-2023 : डॉ. चिन्मय पण्ड्या

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रतिभागियों से कहा कि यह अवसर हम सभी में उत्साह व उमंग भरने वाला है। हार-जीत हर खेल का अंग है। हमें परस्पर प्रेम और सौहार्द के साथ अपनी खेल भावना का परिचय देते हुए एक-दूसरे को सम्मान और प्रोत्साहन देना चाहिए।

प्रथम दिन कुलाधिपति एकादश व विद्यार्थी एकादश के बीच हुए क्रिकेट मैच में भाग लेते हुए प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने आकर्षक खेल का प्रदर्शन करते हुए अपनी टीम को जीत दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

खेल अधिकारी श्री नरेन्द्र सिंह ने बताया कि तीन दिन में कुल 50 प्रकार की खेल और सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। दौड़, वॉलीबाल, बैडमिंटन, कबड्डी, खो-खो, चेस, टेबल टेनिस आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले युवाओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। विद्यार्थी अपने सहपाठियों की जीत में भी खुशी मनाते रहे। विभिन्न प्रतियोगिताओं में माधव, अभिनव, आलोक, दिव्यांशु, गौरव, हर्षिता, वीणा, नीति, प्रेरणा, ज्योतिका, जया, क्षिप्रा, ज्योति, अंश, साहिल आदि विजयी रहे।

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के अंतर्गत डॉ. शिवनारायण प्रसाद के मार्गदर्शन में योग, रंगोली, चित्रकला, स्केचिंग, हारमोनियम वादन, ढपली वादन, शास्त्रीय गायन, सुगम संगीत, शास्त्रीय नृत्य, लघुनाटिका, प्रज्ञागीत अंत्याक्षरी आदि प्रतियोगिताएँ हुईं।

समापन समारोह में प्रस्तुत किए गए भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया। माननीय कुलाधिपति जी के अलावा इस अवसर पर उपस्थित कुलपति श्री शरद पारधी जी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन जी ने विद्यार्थियों के कौशल और खेल भावना की सराहना की। सभी विभागाध्यक्ष सहित विश्वविद्यालय व शान्तिकुञ्ज परिवार हर पल प्रतिभागियों का जोश बढ़ाता रहा।

40 दिवसीय साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति

माघ शुक्ल पंचमी (वसंत पर्व) से फाल्गुन पूर्णिमा (होली) तक

विश्वस्तरीय साधना अनुष्ठान में सैंकड़ों साधक भागीदार बने

जप के साथ योग, ध्यान, स्वाध्याय आदि का दैनिक क्रम जुड़ा था। सोशल मीडिया के माध्यम से हुआ समन्वय

इस वर्ष वसंत पंचमी से होली तक नवयुग की सृजन चेतना को प्रखर करते हुए संगठन शक्ति संवर्धन एवं आत्मीयता के विस्तार, आसुरी शक्तियों के शमन जैसे मनोभाव के साथ शान्तिकुञ्ज के सूक्ष्म संरक्षण एवं मार्गदर्शन में 26 जनवरी (वसंत पंचमी) से 7 मार्च (फाल्गुन पूर्णिमा-होली) तक 40 दिवसीय विश्वस्तरीय गायत्री साधना अनुष्ठान का आयोजन हुआ। वसंत पंचमी के दिन श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने ऑनलाइन इस साधना अनुष्ठान का संकल्प कराया था। होली के दिन शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने ऑनलाइन माध्यम से ही इसकी पूर्णाहुति भी कराई।

इस अनुष्ठान में भारत तथा कई अन्य देशों के सैकड़ों वरिष्ठ और युवा साधकों ने भाग लिया। किशोर एवं बच्चों ने भी गायत्री मंत्र लेखन करते हुए भागीदारी की।

साधना अनुष्ठान में निर्धारित जप के साथ आसन, प्राणायाम, ध्यान, त्रिकाल संध्या, एवं नियमित स्वाध्याय जैसे क्रम भी जुड़े रहे। विश्वव्यापी अभियान में गतिविधियों का समन्वय जूम, यू-ट्यूब और वॉट्सएप ग्रुप के माध्यम से होता रहा।

आई.टी. प्रोफेशन में कार्यरत समर्पित युवा कार्यकर्त्ताओं से आह्वान

टैकी समयदानी

शान्तिकुञ्ज द्वारा विकसित की जा रही गायत्री परिवार की डिजिटल कार्ययोजना से जुड़ें।

यह समय के साथ सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र से जुड़ी माँगों को पूरा करने के लिए IT क्षेत्र के आधुनिकीकरण और पुनर्गठन की योजना है।

इन दिनों सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव से सर्वविदित हैं। इण्टरनेट और मोबाइल पर विभिन्न एप्स के प्रयोग के बिना आज जिन्दगी की कल्पना असंभव है। अतः समय के साथ चलते हुए शान्तिकुञ्ज अपनी सेवाओं में सूचना प्रौद्योगिकी का अच्छा से अच्छा और ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर पूरे अभियान को अधिक प्रभावी और सुविधाजनक बनाने के लिए कार्य कर रहा है।

वर्तमान की आवश्यकताओं और भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए युगऋषि के नाम से ERP System का निर्माण आरम्भ भी हो चुका है। इसके अंतर्गत गायत्री शक्तिपीठों का नेटवर्क स्थापित करना, वेबसाइट्स का निर्माण, ऑफिस-आटोमेशन, सभी वेबसाईट तथा वेब व मोबाईल ऐप्स का क्लाउड स्थानांतरण, डेटाएनालिटिक्स, AI का Image Recognition एवं Text to Voice Conversion में उपयोग, ऑडियो का ऑडियो-वीडियो ऐनीमेशन में कन्वर्जन, क्षेत्रीय केंद्रों का मोनीटरिंग सिस्टम, सदस्यता पंजीकरण एवं कार्ड सिस्टम आदि महत्वाकांक्षी कार्ययोजना के कुछ अंश हैं।

योजना विराट है, जो समर्पित स्वजनों के सहयोग से ही पूरी हो सकेगी। अतः राष्ट्रीय, बहुराष्ट्रीय संस्थाओं में सेवाएँ दे रहे IT Professionals से अनुरोध है कि इस योजना में यथासंभव सहयोग अवश्य प्रदान करें। **आप अपनी वर्तमान सेवाओं से जुड़े रहकर भी अपने कुछ समय और प्रतिभा का योगदान हमें दे सकते हैं।**

कृपया लिंक https://forms.office.com/r/UWaz9pjjr2 में क्लिक कर दिए गए फॉर्म को भर कर अपनी तकनीकी विशेषज्ञता और अपने अनुभव के बारे में हमें जानकारी प्रदान करें।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 27.03.2023
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23